वेदों की ओर लौटो...!

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १५ अंक ८/९ सितम्बर २०१५
वर्ष १५ अंक ८ अगस्त २०१५

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

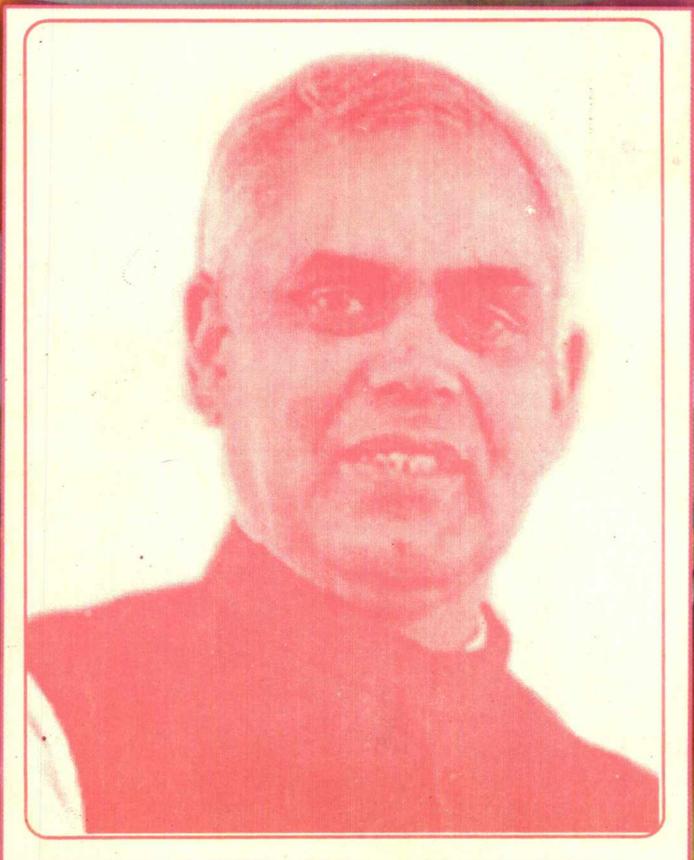

हिमाचल प्रदेश के नवनियुक्त राज्यपाल
प्रसिद्ध आर्य विद्वान् व गुरूकुल कुरूक्षेत्र के यशस्वी संचालक
आचार्य श्री देवव्रतजी का हार्दिक अभिनंदन

पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ - सम्भाजीनगर (औरंगाबाद)

आर्य समाज सम्भाजीनगर द्वारा आयोजित पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ आहुतियां प्रदान करते हुए दयाराम बसैये दम्पती ।

साथ में हैं एड् श्री जोगेंद्रसिंहजी चौहान ।

नेपाल भूकम्प पीडितों की आर्थिक सहायता हेतु रू. ६६,५०० का चैक सभा के कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेनजी राठौर को सौंपते हुए यज्ञ समिति के पदाधिकारी ।

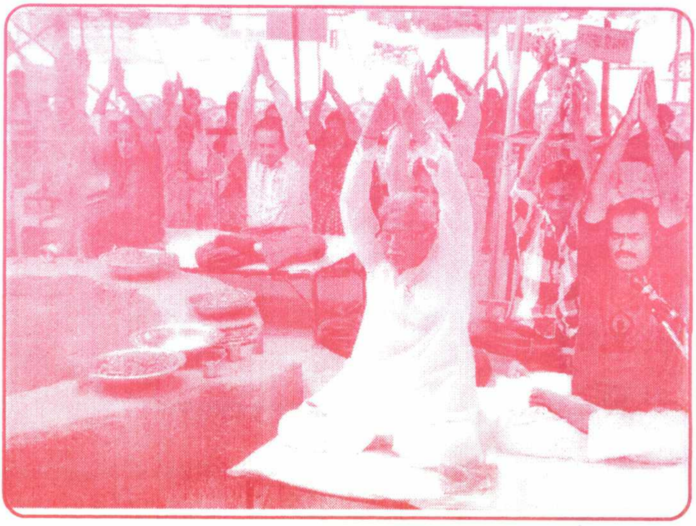

यज्ञ के अवसर पर आयोजित विश्वयोग दिवस में योग करते हुये यज्ञप्रेमी ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११६ कलि संवत् ५११६ विक्रम संवत् २०७२

दयानन्दाब्द १९२ श्रावण/भाद्रपद अगस्त/सितम्बर २०१५

प्रधान सम्पादक

माधवराव देशपांडे

(मो.० ९८२२२९५५४५)

सम्पादक

प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य

(मो.० ९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (मो.०९४२११५११९०४), प्रो.देवदत्त तुंगार (मो. ०९३७२५४१७७७)

प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) सम्पादकीयम्....................४

२) श्रावणी विद्वानों के प्रति ऋणनिर्देश....................५

३) वेदमन्त्रों की पुनरावृत्ति नवार्थों की द्योतक....................६

४) वेदज्ञान से ही जीवन का कल्याण....................८

५) वेदो में पर्यावरण संरक्षण....................१०

६) आप्तपुरूष योगिराज श्रीकृष्ण....................१२

७) शहीदों की याद में....................१४

८) श्रावणी समाचार....................१७

९) समाचार दर्पण....................१८

१०) शोक समाचार....................२४

मराठी विभाग

१) हैद्राबाद संग्रामकालीन आर्यसमाजाची ज्वलंत चळवळ....................२८

२) सत्कार करू अतिथींचा !....................३५

३) वर्षाऋतुतील आरोग्य....................३८

४) शिबिर वार्ता....................४०

५) शोक वार्ता....................४४

६) वार्ता विशेष....................४५

● प्रकाशक ●

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज परली-वैजनाथ ४३१५१५

● मुद्रक ●

वैदिक प्रिन्टर्स महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज, परली-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-

वार्षिक - रू. १००

आजीवन रू. १,०००

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा

सम्पादकीयम्

विचार नष्ट नहीं होते !

संकुचितता के दायरे में संलिप्त मत - पन्थ व जातियां आजकल अपने अस्तित्त्व को बनाये रखने के लिए विघातक तरीके अपना रही हैं। अपनी साम्प्रदायिक कट्टरता को बढावा देने हेतु क्रूरतम हिंसा को अपनाना मानों एक तरह से दानवता का ही संकेत है।

धार्मिक दम्भ व पाखण्ड से चिपके हुए ये लोग सच्चाई को स्वीकार करना तो दूर, बल्कि अपनी बुराई बतानेवालों को ही खतम करना चाह रहे हैं। उधर इस्लामिक आतंक से एक ओर संसार के अनेकों देश पीडित व भयभीत हैं, कितने ही आतंकवादी संगठन जेहाद के नाम पर खून की नदियां बहा रहें हैं, तो इधर भारत में कुछ पन्थवादी अब हिंसा का आश्रय लेकर अपने विरोधी विचारों का गला घोंट रहें हैं। इन घटनाओं के पीछे संदेह सनातन नामक पौराणिक संगठन का हाथ होने की चर्चा सर्वत्र है। पिछले डेढ वर्ष पूर्व पुणे में डॉ. नरेन्द्र दाभोलकर जैसे अन्धविश्वास के विरूद्ध काम करनेवाले समाजसेवी की हत्या हुई, छः माह पूर्व कोल्हापूर में काम्रेड गोविन्द पानसरे जैसे यथार्थवादी कम्युनिष्ट नेता को मारा गया, तो अब इसी माह कर्नाटक के हम्पी विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति तथा विवेकवादी साहित्यिक डॉ. एम.एम. कलबुर्गी की जघन्य हत्या की गई। इन तीनों का क्या अपराध था ? ये लोग तो हिन्दू समाज में फैलती सामाजिक कुरीतियों, अन्धविश्वासों तथा ईश्वर, धर्म व अध्यात्म के नाम पर चल रहे पाखण्ड के खिलाफ आवाज उठा रहे थे। सामान्य जनता को उन बन्धनों से मुक्त कराना चाहते थे, जो दिन प्रतिदिन दुःख का कारण बनते जा रहे थे। इनके वैज्ञानिक व सत्याधारित विचारों की चुनौति को स्वीकार करने के बजाय उनकी हत्याएं करना कितना उचित है ? यह तो विवेकशील विचारों को समाप्त करने का सोचा-समझा षड्यंत्र ही। प्रगतिशील विचारधारा के इन संवाहकों में विशुद्ध आध्यात्मिक विचारों का अभाव जरूर है, किन्तु आर्य समाज जिन अविद्यादि दोषों के विरूद्ध लडाई लड रहा है, उन्हीं बढते पाखण्ड, दैववाद, जादुई भ्रमजाल तथा भूतप्रेत पिशाचादि बुराइयों से ये सुधारवादी लोग सामान्य जनता का पिंड छुडाना चाहते हैं। अतः विचारों को नष्ट करने के लिए सुधारकोंकी हत्याएं करना, यह मानों अपने विवेक को ही खोना हैं। आर्य समाज इसका निषेध करता है।

-डॉ. नयनकुमार आचार्य

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

मानव जीवन कल्याण ज्ञान प्रचार अभियान २०१५

-विद्वानों व भजनोपदेशकों के प्रति 'ऋणनिर्देश'-

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गत दि.१५ अगस्त से १३ सितम्बर २०१५ के दौरान राज्य में व्यापक रुप में **'मानव जीवन कल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान' (श्रावणी वेदप्रचार)** सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इसके लिए सभा ने उत्तर भारत के १७ तथा इस प्रांत के लगभग ५० विद्वानों व भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया था। सभी ने पूर्वनिर्दिष्ट विभिन्न तिथियों में अलग-अलग से लगभग सवा सौ आर्य समाजों में पहुंचकर बडी निष्ठा, लगन व सहृदयता के साथ वेदप्रचार किया। इन विद्वानों को यात्रा, निवास तथा कार्यक्रम करते हुए कुछ अव्यवस्था, असुविधा हुई होगी तथा नानाविध कष्ट उठाने पडे होंगे। ऋषि दयानन्द के वेदप्रचार मिशन को पुरा करने में आप सभी प्रचारको ने बढी सराहनीय भूमिका निभाई। एतदर्थ हम आप सभी के प्रति धन्यवाद प्रकट करते हैं।

विशेषतः बाहर से पधारे विद्वानों ने पूरा एक माह का समय इसके लिए दिया। अपने घर-परिवार की सारी जिम्मेदारियों को छोडकर हमारी सभा के निवेदन को सहर्ष स्वीकार कर वेदप्रचार के पवित्र कार्य में अपना पूरा योगदान दिया। अतः हम आपके सविनय ऋणी हैं। सभी विद्वानों व भजनोंपदेशकों का सहृदय आभार! इसी प्रकार से आगामी वर्ष में भी सहयोग मिलें, यही शुभ आकांक्षा!

* आर्य समाजों का धन्यवाद *

प्रान्तीय सभा के निर्देशानुसार दी गयी तिथियों पर राज्य की सभी आर्य समाजों ने अपने-अपने श्रावणी वेदप्रचार उत्सव २०१५ मनायें। कार्यक्रमों का प्रचार, सुव्यवस्थित नियोजन, धन (दान) संकलन, श्रोताओं से अनुरोध, बाहर सार्वजनिक स्थानों,स्कूल व कॉलेजों के कार्यक्रमों का नियोजन, यज्ञ की तैयारी, विद्वानों के निवास व भोजन की व्यवस्था, उनका सम्मान आदि सभी बातों के लिए आप सभी म.दयानंद के अनुयायियों व वैदिक धर्मियों को काफी मेहनत उठानी पड़ी। अपने व्यक्तिगत कार्यों की उपेक्षा कर मानवमात्र को वेदज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से आपने यह सब किया। एतदर्थ आप सभी के मन:पूर्वक धन्यवाद व आभार!

-उपर्युक्त सभी विद्वानों, भजनोपदेशकों, आर्यसमाजों व आर्यकार्यकर्त्ताओं के आभारोत्सुक-

डॉ. ब्रह्ममुनि	माधव देशपाण्डे	उग्रसेन राठौर	लक्ष्मण आर्य
(प्रधान)	(मन्त्री)	(कोषाध्यक्ष)	(वेदप्रचार अधिष्ठाता)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, परली-वैजनाथ जि. बीड

वेदमन्त्रों की पुनरावृत्ति नव अर्थों की द्योतक

–डॉ. महावीर आचार्य
(कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत वि.वि.,हरिद्वार)

'कविर्मनीषी परिभू स्वयम्भूः।'

इन शब्दों में स्वयं परमपिता परमात्मा ने अपना कविरूप प्रतिपादित किया है । **'पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति।'** कहकर वेद का अमर काव्यत्व निरूपित किया गया है ।

न जाने कितने स्वनामधन्य, तत्त्वदर्शी मनीषियों ने वेदज्ञान के आलोक से स्वयं को आलोकित कर संसार को भी वेदालोक से आलोकित करने का अभिनन्दनीय कार्य किया है ।

उन्नीसवीं सदी में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदाध्ययन एवं उसमें निहितार्थ को हृदयंगम करने का मार्ग दिखाया । सम्पूर्ण यजुर्वेद एवं ऋग्वेद का आंशिक भाष्य कर वेदार्थ की विधि बताई । ऋषिवर की चिन्तनधारा का अनुवर्त्तन करनेवाले वेद मनीषियों ने वेद विषयक अनेक ग्रन्थों का निर्माण कर मन्त्रार्थ करते समय बाधक बननेवाली ग्रन्थियों को खोलने का प्रयत्न किया है ।

वेद नित्य हैं अथवा अनित्य, पौरूषेय हैं अथवा अपौरूषेय, ऋषियों, मन्त्रद्रष्टारः अथवा मन्त्रकर्तारः, वेद में इतिहास है अथवा नहीं, आदि अनेक प्रश्नों का समाधान वैदिक विद्वानों ने प्रमाण पुरस्कार किया है ।

वैदिक संहिताओं का पाठ करते समय अनेक मन्त्रों एवं मन्त्रांशों की पुनरावृत्ति को देखकर शंका होने लगती है कि जिन ऋचाओं की एक-एक मात्रा एवं एक-एक अक्षर निश्चित है, अपरिवर्त्तनीय है, उनमें पुनरावर्त्तन का क्या अभिप्राय है ? इस विषय में डॉ. रामनाथ वेदालंकार प्रभृति वेद के वरिष्ठ व्याख्याकारों ने स्वतन्त्र रूप से शोधपत्रों एवं पुस्तक लेखन द्वारा सारगर्भित विचार प्रस्तुत करते हुए प्रमाणित किया कि पुनरावृत्ति वैदिक संहिताओं का विभूषण है न कि दूषण । एक शब्द अथवा एक मन्त्र सन्दर्भ, प्रसंग के अनुसार भिन्न अर्थ को द्योतित करता है । उदाहरणार्थ एक शब्द है **'सैन्धव'** इसके प्रमुख दो अर्थ हैं - अश्व एवं नमक । यदि युद्ध अथवा यात्रा का प्रसंग है, तो सैन्धव का अर्थ होगा घोडा, किन्तु पाकशाला या भोजन के प्रसंग में अर्थ होगा लवण । ठीक इसी तरह जिन मन्त्रों एवं मन्त्रांशों की पुनरावृत्ति दृष्टिगोचर होती है, वहाँ पर भी यह सिद्धान्त कार्य करता है । यही वेद की महनीयता है महंत्व का अंश, ऋषि, देवता, छन्द एवं स्वरांकन के आधार पर भी अर्थ परिवर्तन होता है । वेद विविध विद्याओं एवं ज्ञान-विज्ञान की

गंगोत्री है, अतः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद के मन्त्रों से नये-नये अर्थ प्रकाशित हो, यही पुनरावृत्ति का अभिप्राय है । इस सम्बन्ध में चिन्तन की, नूतन लेखन की महती आवश्यकता को देखते हुए विद्वान लेखक डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे ने अपनी लेखनी उठाई और सतत स्वाध्याय एवं चिन्तन के बल पर इस क्लिष्ट विषय पर गम्भीरता से लेखन प्रारम्भ किया । प्रो. चन्द्रकान्त जी ने इस पुस्तक के माध्यम से सिद्ध किया है कि जिन मन्त्रों की पुनरावृत्ति दिखाई देती है, उनमें कोई अन्य महत्वपूर्ण अर्थ छिपा हुआ है ।

- २२, नन्दविहार,
अवधूत मण्डल के सामने,
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

पूर्व राष्ट्रपति 'मिसाईमैन' डॉ. कलामजी को श्रद्धांजलि !

भारत की अण्वस्त्रशक्ति को संवर्धित करनेवाले महान देशभक्त एवं 'मिसाईलमैन' के रूप में अपनी पहचान बनानेवाले देश के पूर्व राष्ट्रपति भारतरत्न डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का गत २७ जुलाई २०१५ को शिलांग में ह्रदयाघात से दुःखद निधन हुआ ।

वहां की 'इण्डियन इन्स्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट' इस संस्था में अध्ययनरत छात्रों को डॉ. कलाम सम्बोधित कर रहे थे। उसी समय दिल दौरा पडने से वे मूर्छित होकर गिर पडे और कुछ ही समय में कालकवलित हो गये ।

अत्यंत प्रतिकूल परिस्थितियों में बचपन बीतानेवाले श्री कलाम ने कडी महनत उठाकर अपना अध्ययनकाल पूरा किया । विज्ञान व तंत्रज्ञान क्षेत्र में एक कुशल अणुवैज्ञानिक के रूप में आपने महनीय भूमिका निभाई । जीवनभर अविवाहित रहकर डॉ. कलाम ने राष्ट्र की अण्वस्त्रशक्ति को विकसित करनेमें पूरा योगदान दिया । पूर्णतः शाकाहार को अपनानेवाले व मानवीय मूल्यों को जीवन का अंग बनानेवाले ऐसे निःस्वार्थी व्यक्तित्व ने देश के सर्वोच्च राष्ट्रपतिपद को भी सुशोभित किया । जीवन के अन्तिम क्षणों तक विद्यार्थियों का पथप्रदर्शन करनेवाले डॉ. कलामजी के चले जाने से देश के विज्ञान जगत् की अपूरणीय क्षति हुई है । इस आप्तपुरूष को आर्य जगत् व प्रान्तीय सभा की भावभीनी श्रद्धांजलि !

वेदज्ञान से ही जीवन का कल्याण

– महात्मा चैतन्यमुनि

अविवेक ही व्यक्ति के समस्त दुःखों का कारण माना गया है । इसलिए जो भी जीवन में सुख चाहता है, उसे विवेकशील होना अनिवार्य है । विवेकी बनने के लिए वेद ही सर्वोत्तम ग्रन्थ हैं, क्योंकि वेद स्वयं परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है । जिस प्रकार सूर्य के अभाव में अन्धकार में डूबकर व्यक्ति ठोकरें खाता है, ठीक इसी प्रकार वेद ज्ञान के अभाव में व्यक्ति भटक जाता है । महर्षि पतंजलिजी ने अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश को क्लेश माना है तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अविद्या को ही अन्य क्लेशों का भी जनक माना है । उनके अनुसार अविद्या ही समस्त दुःखों का कारण है । व्यक्ति, समाज, परिवार या राष्ट्र वेदानुयायी बनकर ही सुख, शान्ति और समृद्धि को प्राप्त हो सकता है । इसलिए महर्षि दयानन्द जी ने अपना कोई अलग सम्प्रदाय न चलाकर लोगों को एक ही सत् परामर्श दिया कि **'वेदों की ओर लौटों ।'** वेद स्वयं ही ज्ञान का पर्याय है । अतः अज्ञानान्धकार का निराकरण करने के लिए वेदों का स्वाध्याय नितान्त अनिवार्य है । वेद का मनन व चिन्तन करने के लिए प्राचीन काल से ही जन साधारण को वेद के मनीषियों के यहां जाकर ज्ञान प्राप्त करने की परम्परा रही है, जो कालान्तर में लुप्त प्राय होती चली गई । मगर आर्यसमाज जैसी उत्कृष्ट संस्थाद्वारा आज भी वेदस्वाध्याय के प्रति जनसाधारण में जागरूकता पैदा करने के लिए वेद सप्ताह अर्थात् श्रावणी पर्व का आयोजन किया जाता है । आर्यसमाज संस्था की यह विशेषता है कि यह किसी मत-मजहब को लेकर व्यक्तियों को बांटने का कार्य नहीं करती, बल्कि परमात्मा के ज्ञान वेद को लेकर समूची मानवता को एकता के सूत्र में बांधकर तथा वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार द्वारा व्यक्ति के चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करती है । श्रावणी पर्व के अवसर पर वेद स्वाध्याय के प्रति लोगों में न केवल रुचि पैदा की जाती है, बल्कि इस अवसर पर बडे-बडे पारायण यज्ञों का भी आयोजन किया जाता है । यह एक अत्यधिक स्तुत्य प्रयास है अन्यथा आज प्राचीन सस्कृति को लोग भूलते चले जा रहे हैं और अनेक प्रकार के सम्प्रदायों में बंटकर वातावरण को स्वार्थमय तथा विषाक्त बनाते चले जा रहे हैं ।

वेद हमें भौतिक और आध्यात्मिक रूप से सम्पन्नता प्राप्त करने की प्रेरणा देता है । आज व्यक्ति भौतिकतावाद में इतना अधिक संलिप्त हो चुका है कि इसे प्राप्त करने के लिए वह पूरी तरह से विवेकहीन

हम चिन्तन करें कि आखिर मानव–मानव के भीतर ये दूरियां क्यों बढती चली जा रही है ? होता यह है कि अपने तप, त्याग और साधना से कोई भी व्यक्ति जब उच्चतम स्तरों को छू लेता है, तो उसके बहुत से अनुयायी भी बन जाते है, ये अनुयायी उन आदर्शों पर तो चल नहीं पाते है, मगर मात्र लकीर के फकीर बन जाते हैं । उस महापुरूष ने जिस तप और त्याग से जीवन की ऊंचाइयों को छुआ था, उस प्रक्रिया को नजरंदाज करके उस महापुरूष की ही पूजा–अर्चना शुरू कर दी जाती है । आज हमारे समाज़ में ऐसे पैगम्बरों, अवतारों और गुरूओं की मानों बाढ सी आ गई है । गुरू होना, तो बुरी बात नहीं मगर गुरूडम प्रथा ने इस समाज का बहुत अहित किया है । इससे मानवीय एकता को बहुत बडा धक्का लगा है तथा परमात्मा के स्थान पर व्यक्तियों की पूजा होने लगी है । इस व्यक्तिपूजा ने अन्य अनेक प्रकार की कुरीतियों को भी जन्म दिया है । इसी के आधार पर व्यक्तियों द्वारा बनाए गए अलग–अलग ग्रन्थों और उपदेशों को प्रमाण मानने की अज्ञानता का भी जन्म हुआ है । अलग–अलग नामों और पूजा पद्धतियों ने एक मानव धर्म को अनेक सम्प्रदायों में बांट दिया है । यह एक अटल सत्य है कि कोई भी महापुरूष परमात्मा नहीं बन सकता है और अल्प ज्ञानी होने के कारण न ही उसके

हो चुका है । अनैतिकता का सहारा लेकर व्यक्ति उन सुख – सुविधाओं को जुटाने में लगा हुआ है, जिनसे तृप्ति मिलनेवाली नहीं है । जो व्यक्ति को तृप्ति तक पहुंचा सकती है, उस आध्यात्मिकता को सब भूलते चले जा रहे हैं । शारीरिक आवश्यकताओं की भूख इतनी अधिक बढ गई है कि व्यक्ति इससे आगे कुछ भी सोचने के लिए तैयार नहीं है । ये भौतिक प्रसाधन उसे अन्ततः तृप्ति देनेवाले नहीं है । इस सत्य का भी उसे पग–पग पर आभास होता रहता है, मगर मृगतृष्णा रूपी भटकाव में वह निरन्तर भटकता चला जा रहा है । ये सांसारिक भोग उसे हर बात की चेतावनी देते हैं कि हममें तुम्हें तृप्त करने का सामर्थ्य नहीं है, मगर व्यक्ति बार–बार भोगों में डुबकर और अतृप्त होकर भी वही तृप्ति खोज रहा है जहां वह है ही नही, वह इस जीवनरूपी चौराहे पर खाली का खाली खडा है । अतृप्त है, रो भी रहा है, तडप भी रहा है, मगर पुनः पुनः भौतिक भोगों की आग में स्वयं को झोंकता भी चला जा रहा है । उसकी स्थिति ठीक इस प्रकार की हो गई है, मानों कोई अपनी हथेली पर आग का अंगारा लेकर खडा हुआ हो, उसे छोडने के लिए भी तैयार नहीं है और उसकी जलन के कारण तडप भी रहा हो । वह इतना भी ज्ञान नहीं रखता कि जलन देनेवाली अग्नि को तो उसने स्वयं ही पकड रखा है ।

द्वारा दिया गया ज्ञान निर्भ्रान्त और पूर्णतः सत्य हो सकता है । मगर आज जैसे मानों अन्धे ही अन्धों को रास्ता दिखा रहे है । इसलिए अज्ञानता के गड्ढे में गिरकर चतुर्दिक् विनाश हो रहा है । तथाकथित इन भगवानों की भीड में परमात्मा कहीं खो गया लगता है और मत-मजहब एवं सम्प्रदायों की अज्ञानता में मानवीय गुणों का ह्रास हुआ है । एक सामूहिक सोच जिससे हमारी चतुर्दिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होना था, विलुप्त हो गई है । अतः आज इस बात की परम आवश्यकता है कि मानव मूल्यों की पुनः स्थापना करने के लिए एक सामूहिक सोच का विकास किया जाए, जो वेद के आधार पर ही हो सकती है। क्योंकि एकमात्र वेद पूर्णतः सार्वभौमिक और परमात्मा की सत्य वाणी है ।

- वैदिक वशिष्ठ आश्रम,
महादेव, सुन्दरनगर,
जि. मण्डी (हि.प्र.)

वेदों में पर्यावरण संरक्षण

- डॉ.भवानीलाल भारतीय

चतुर्वेद संहिताओं में सर्वत्र मानव को अपने पर्यावरण की स्वच्छता और निर्मलता पर ध्यान देने के लिए कहा गया है । पर्यावरण के पांच तत्व हैं, जिन्हें शास्त्रों में पंचमहाभूत कहा गया है । गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में -

क्षिति जल पावक गगन समीरा ।
पंच रचित यह अधम शरीरा ।।

पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश तथा वायु वे तत्त्व हैं, जिनमें न केवल प्राणियों के शरीर की रचना होती है, अपितु प्रकृति का यह विस्तार, भौतिक संसार भी पर्यावरण के रुप में इन्हीं तत्त्वों का व्यक्त रुप है । अथर्ववेद का पृथ्वीसूक्त तो धरती माता के संरक्षण, संवर्धन तथा उसकी विविधता को सुरक्षित रखने का आदेश देता है । तो वातसूक्त में वायु को स्वच्छ रखना, आपःसूक्त में जल को स्वच्छ, मलरहित तथा नीरोग बनाना सर्वोपरि बताया है । जल को शिवतम अर्थात् अत्यन्त कल्याणकारी बताया गया है । **'पर्जन्यो अभिवर्षतु'** कहकर यह आदेश दिया है कि, ऐसे उपाय किये जायें, जिससे यथासमय पर्याप्त वर्षा हो और अकाल न पडे । वेदों में पर्यावरण विषयक प्रचुर सामग्री प्राप्त होती है ।

सर्वोपरि धरती के पर्यावरण को संतुलित और स्वच्छ रखने के परिणामों की ओर ध्यान दिलाया गया है । पर्यावरण संरक्षण के द्वारा ही धरती का माता रुप स्पष्ट होगा और हम कहेंगे -

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।

इससे पहले कि हम धरती के पर्यावरण विषयक वेद का दृष्टिकोण जानें। यह जानना आवश्यक है कि, उपर्युक्त संकेंतित मन्त्रों में जल को ऊर्जावर्धक तथा अन्नादि से प्रचुरता से उत्पन्न करनेवाला बताया गया है। अग्नि के विषय में शास्त्रों का कथन है कि अग्नि से विद्युत उत्पन्न करें और अशनिपात (बिजली का गिरना)जैसी आपत्तियों से बचें।

वस्तुत: धरती के पर्यावरण रक्षण में हमारी आश्रयदाता भूमि का मुख्य स्थान है। तभी तो धरती को विश्वम्भरा, वसुधानी तथा रत्नगर्भा कहा गया है। धरती पर जो विशाल पर्वत हैं, उनका दिन प्रतिदिन क्षरण हो रहा है। कारण है वनों के निरन्तर कटने से भूमि के तल में खोखलापन आना। वेद कहता है कि, धरती की उपरी सतह पर बसी लाल माटी दिखाई देती है। लाल, काली आदि इन मिट्टियों की रक्षा होनी चाहिए। मारिशस देश में एक ऐसा स्थान है, जहाँ की अनेक रंगों वाले मिट्टी को यात्री-पर्यटक अपने साथ ले जाते हैं। इस धरती में एक प्रंकृत सुगन्ध है, जिसे सूंघकर देशभक्तों ने प्राण न्यौछावर कर दिये थे। वेद का कथन है कि ग्रीष्म, वर्षा, हेमन्त, शीत, शिशिर, वसंत आदि विभिन्न ऋतुएं भी तभी अपना वैभव हमें देंगी, जब हम पर्यावरण के नियम पालेंगें। अन्यथा यूं ही अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकंप आदि विपत्तियों के शिकार होते रहेंगें। न केवल धरती की रक्षा जरुरी है, उस पर विचरण करनेवाले ग्राम्य और आरण्य पशुओं का संरक्षण भी आवश्यक है। अकेले पृथ्वीसूक्त में ही पर्यावरण के नियम उल्लिखित है, ऐसा नहीं अपितु प्रकृति को संवारने तथा उपयोगी बनाने की अन्यत्र भी चर्चा है।

- ३/५, शंकर कालोनी,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

चलो सीडनी (आष्ट्रेलिया) ! चलो सीडनी (आष्ट्रेलिया) !!

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन २०१५

आर्यों को विदित कराते हुए हर्ष हो रहा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य समाज आष्ट्रेलिया के संयुक्त तत्त्वावधान में इस वर्ष का **'अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन'** सीडनी **(ऑष्ट्रेलिया)** में **दि. २७ से २९ नवम्बर २०१५** के दौरान सम्पन्न हो रहा है। अनेकों वैदिक विद्वानों, तपस्वी सन्यासियों, मनीषियों के सान्निध्य में विविध सम्मेलनों का आयोजन इस अवसर पर होगा। साथ ही आष्ट्रेलिया के विभिन्न पर्यटनस्थलों को भी देखने का भी सुअवसर प्राप्त होगा। अत: अधिकाधिक आर्यजन इस सम्मेलन में सम्मिलित होवें। अधिक जानकारी हेतु ०९८२४०७२५०९ डायल करे तथा www.thearyasamaj.org पर देखें। **- सभामन्त्री**

आप्तपुरूष योगिराज श्रीकृष्ण

–स्वामी प्रशान्तानन्द सरस्वती

आज से लगभग ५२४२ वर्ष पूर्व भाद्रपद कृष्ण अष्टमी बुधवार रोहिणी नक्षत्र में उत्तर भारत के शूरसेन देश की राजधानी मथुरा में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ, किन्तु उनका बाल्यकाल गोकुल में नन्दजी के यहाँ व्यतीत हुआ । जहाँ बाल्यकाल में श्रीकृष्णजी नन्दजी, यशोदा एवं अन्य गोकुलवासियों को अपनी बाल–लीलाओं से हर्षित करते थे, वहीं कुछ बडे होकर मल्लविद्या में सिद्धहस्त होकर अत्यन्त बलिष्ठ हो गये । उनके अनुपम बलवान होने का प्रमाण उनके द्वारा अनेक दुष्टों, आततायियों जैसे पूतना, यमुना नदी में विद्यमान भयंकर काला सर्प चाणूर, मुष्टिक, कुवलया पीड हाथी एवं दुराचारी कंस के विनाश से मिलता है ।

नन्दजी के यहाँ बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था व्यतीत करने के कारण श्रीकृष्णजी का नियमपूर्वक गुरूकुल में रहकर विद्याध्ययन नहीं हो पाया था तथा यज्ञोपवीत संस्कार से भी वे संस्कारित नहीं हुए थे । अतः २१ वर्ष की अवस्था में उनका यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न कर उज्जैन नगरी में गुरू सान्दीपनीजी के आश्रम में विद्याध्ययन हेतु उन्हें भेजा गया । गुरूकुल में अपने सहपाठी सुदामा उनके प्रिय मित्र थे । उनके साथ वे यज्ञ के लिए वन से समिधा लाने, फल लाने एवं गोसेवा तथा गुरूसेवा आदि कार्यों में तत्पर रहते हुए विद्याध्ययन करते थे । इस प्रकार वे शीघ्र ही वेद वेदांग आदि शास्त्रों में निपुणता प्राप्त कर धनुर्विद्या में भी पारंगत हो गए ।

गुरूकुल से समावर्त्तन संस्कार कराकर श्रीकृष्णजी मथुरा लौटे तथा अपने पराक्रम व बाहुबल से द्वारिका में समृद्ध राज्य स्थापित कर उसका संचालन किया । विदर्भ के राजा भीष्मक की पुत्री रूक्मिणी से श्रीकृष्णजी ने विवाह कर १२ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन किया, तत्पश्चात् **‘प्रद्युम्न’** नामक तेजस्वी पुत्र को प्राप्त किया । ७० वर्ष की आयु में गृहस्थाश्रम को पूर्ण करके पौत्र अनिरूद्ध का मुख देखकर योगाभ्यास के लिए उन्होंने काम्यक वन को प्रस्थान किया । बाल्यकाल के बलिष्ठ तथा यौवन के मल्लश्रेष्ठ केशव योगाभ्यास से तपकर अब योगिराज श्रीकृष्ण बन गए । अपने जीवन को उत्कर्षता के शिखर पर

पहुँचाकर अपनी बुआ कुन्ती जी के पुत्र पाण्डवों को अपना संरक्षण एवं सहाय प्रदान किया । अभिमानी दुर्योधन को महाभारत युद्ध से रोकने के लिए पाण्डवों की ओर से शान्तिदूत बनकर श्रीकृष्ण ने कौरवों की राजसभा में जाकर मार्मिक वक्तव्य देते हुए कहा –

कुरूणां पाण्डवानां च
समः स्यादिति भारत ।
अप्रणाशेन वीराणामेतद्याचितुमागतः ।।

अर्थात् हे दुर्योधन ! वीरों के नाश के विना ही कौरवों और पाण्डवों के बीच शान्ति–स्थापना हो जाए ,इसलिए मैं शान्ति का सन्देश लेकर आया हूँ । किन्तु दुर्योधन ने इस पर कुछ भी ध्यान न दिया और यही कहा –

'सूच्यग्रं नैव प्रदास्यामि
विना युद्धेन केशव ।'

अर्थात् हे केशव ! विना युद्ध के मैं सूई की नोक के बराबर भी भूमि न दूंगा।

अन्त में विवश होकर श्रीकृष्णजी वापस चले आए और कौरव पाण्डवों के बीच घमासान युद्ध हुआ, जिसमें १७० वर्ष के बृद्ध भीष्म पितामह सहित अनेक योद्धाओं एवं विद्वानों ने भाग लिया । इस युद्ध में ४७ लाख, २३ हजार, ९२० योद्धा मारे गये । किन्तु युद्ध में विजय पाण्डव पक्ष की ही हुई, जहाँ श्रीकृष्ण ने अर्जुन का सारथि बनकर धर्मप्रिय पाण्डवों को विजय दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

अन्त में श्रीकृष्णजी वन में पुनः तप करनें के लिए चले गए । एक बार श्रीकृष्णजी वन में लेटे थे, तब जरा नामक एक व्याध ने दूर से उनको हिरण समझ कर बाण मारा, जो उनके पांव में आकर लगा और उसी से उनका १२५ वर्ष की अवस्था में देहान्त हो गया ।

ऐसे थे महान् योगी, विद्वान, धर्मात्मा आप्तपुरूष योगेश्वर श्रीकृष्ण महाराज !

–आर्ष गुरूकुल, भवानीपुर,
पो. मोथाला जि. कच्छ (गुजरात)

राज्यपाल श्री आचार्य देवव्रतजी को हार्दिक बधाई

आर्यजनों के लिए बहुतही गौरव एवं हर्ष का विषय है कि गुरूकुल शिक्षालय, कुरूक्षेत्र (हरियाणा) के प्रधान संचालक एवं कर्मठ आर्यसेवी श्री आचार्य देवव्रतजी को केंद्र सरकार ने हिमाचलप्रदेश के राज्यपाल पद पर नियुक्त किया है । इस सुखद समाचार से आर्यजगत् में आनन्द की लहर छा गयी है । आचार्य श्री देवव्रतजी ने बडे पुरूषार्थ से गुरूकुल कुरूक्षेत्र को शैक्षिक विकास की चरमसीमा पर पहुंचाया है । ऐसे आर्यव्यक्तित्त्व के हिमाचल प्रदेश राज्यपाल पद पर नवनियुक्त होनेपर उनका आर्यजगत् व प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से हर्दिक अभिनन्दन व बधाई ! – सभामन्त्री

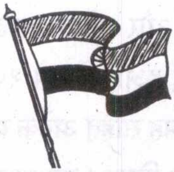

शहीदों की याद में...

– माधव के. देशपाण्डे
(मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा)

अनेकों वर्षों की गुलामी के पश्चात् भारतवासियों को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है। १५ अगस्त यह दिवस देशवासियों के हृदय में स्वर्णिम अक्षरों से लिखा जाएगा । क्यों कि यह स्वतन्त्रता हमें सहज ही प्राप्त नहीं हुई है । इसके लिए अनेकों ने बलिदान दिया है । हमें यह खुशी का दिन दिखलानेवाले शहीदों का त्याग हम क्षणभर मे ही भूल जाते हैं, यह खेद का विषय है । इस घटना को ६८ वर्ष पूर्ण हो गए हैं । नयी पीढी के लोग शब्दशः इन्हें भूल गये हैं । इन हुतात्माओं की हम याद करें व उनके चरित्र को पढे, इसके लिए तो आज हमारे पास समय का ही अभाव है । स्वतन्त्रता आंदोलन में छोटे बच्चों से लेकर स्त्रियों व वृद्धों ने भी बढ-चढकर भाग लिया और अपना सर्वस्व गवाया था । उनमें से अनेकों के नाम भी आज याद किये नहीं जाते ! उनकी मूर्तियाँ तो क्या ? चित्र भी नजर नहीं आते । उनके त्याग और कार्यों की कहानियाँ भी आज पाठ्यपुस्तकों से निकाल दी गई हैं । उनका स्थान अब राजनीतिक व्यक्तियोंने लिया है । शहीदों के विषय में मराठी के किसी कवि ने ठीक ही कहा है-

“परि तयांच्या स्मृतिस्थळांवर
नाही चिरा नाही पणती
तेथे कर माझे जुळती !”

क्या आपको पता है कि भारत का प्रथम स्वतन्त्रता सेनानी कौन था ? भारत की एक सुप्रसिद्ध तत्वज्ञानी महिला श्रीमती डॉ. ॲनी बेसंट लिखती हैं – ‘स्वामी दयानन्द सरस्वती ही प्रथम भारतीय थे, जिन्होंने अंग्रेजो के (तत्कालीन शासक) विरूद्ध धार्मिक और राजकिय आंदोलन छेडा था और कहा था – **भारत भारतियों का है परकीय सत्ता का शासन कितना भी अच्छा हो, किन्तु वह स्वदेशियों से बढकर नही हो सकता !**’ अंग्रेजों की पक्षपाती राजनीति की कडी आलोचना उन्होंने अपने प्रसिद्ध पुस्तक **सत्यार्थ प्रकाश** में की है । बलिदानी देशभक्तों व स्वतंत्रता सेनानियों की बहुत लंबी सूचि बनती है । यह सूचि मई १८५८ के हुतात्मा मंगल पांडे के नाम से प्रारम्भ होती है, जो कि पहला शहीद हुए थे और यह बलिदानी परम्परा ३० जनवरी १९४८ के महात्मा गांधी की हत्या तक चलती है । उनमें से बहुत ही कम नाम हम जानते हैं । देश के लिए मर मिटनेवालों में श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्वतन्त्रतावीर विनायक दामोधर

सावरकर व उनके बंधू, चापेकर बंधू, वासुदेव बळवंत फडके, भाई बालमुकुन्द, स्वामी श्रद्धानन्दजी, रामप्रसाद बिस्मिल , अशफाकउल्ला, चंद्रशेखर आझाद, भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव, खुदीराम बोस, यतीन्द्रनाथ संन्याल (जिसने जेल में ६३ दिन तक भूक हरताल की थी और उनका जेल में ही निधन हुआ), मदनलाल धींग्रा, उधमसिंह, सुभाषचंद्र बोस, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय इत्यादि आते हैं। इसमें जालियनवालां हत्याकाण्ड के और इसके समान अन्य अनेकों हत्याकाण्डों में शहीद हुए अनगिनत नाम इतिहास को भी पता नही हैं। इसमें हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के नाम भी नहीं हैं।

जब मैं (लेखक) नासिक में रहता था, तो कभी-कभी सावरकरनिर्मित अभिनव भारत इस संगठनस्थली पर जाया करता था। यहीं अनेकों शहीदों की चित्रप्रदर्शनी लगी है। उस समय के संबंधित समाचार भी हमें वहाँ देखने को मिलते हैं।

यह तो हुआ गत सौ-डेढ सौ वर्षों का इतिहास ! उसके पहले क्या था ? क्या हम कभी स्वतंत्र नहीं थे ? थे तो कब तक थे ? हम गुलाम क्यों बनें ? स्वतंत्रता में ऐसी क्या विशेषता है ? जो आज हम इसका गुणगान कर रहे हैं ? फिर कब हम स्वतंत्र थे ? तो गुलाम क्यों हुए ? हमें किसने गुलाम बनाया था ? हमारा चक्रवर्ती साम्राज्य किसने छिना था ? क्या इसके कारणों की हम कभी चर्चा करते हैं ? क्या वही कारण आज हम यदि स्वतंत्र है, तो वे हमारे राष्ट्र में आज भी विद्यमान है ? क्या हम इस पर गंभीरता से सोंचते हैं ? इस परिस्थिति पर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गंभीरता से चिन्तन किया है। अपनी अमर कृति **सत्यार्थ प्रकाश** में इसपर लिखा है। म. दयानंद लिखते हैं- 'इस देश को जो रोग लगा हुआ है, वह हम जानते हैं और उसकी औषधि आपके पास नहीं, हमारे पास है।' वे अंग्रेज शासकों से कभी सत्य बोलने में डरते नहीं थे। उन्हें रोकने पर भी वे उनके मत की आलोचना अवश्य करते थे।

महाभारत युद्ध में अनेकों योद्धाओं और विद्वानों का नाश हुआ और वेदविद्या एवं अन्य सारी विद्यायें नष्ट हुई। यहां के राजाओं की आपस की फूट, जो महाभारत युद्ध का प्रमुख कारण रही है। इसी से भारत में परकियों की सत्ता स्थापन हो गयी।

स्वतन्त्रता क्या है ? क्या हम आज पूर्ण स्वतंत्र है ? मनुष्य कभी पूर्ण स्वतंत्र नहीं होता। अपने कर्म करने में तो वह स्वतंत्र है, किन्तु परमेश्वर की व्यवस्था में कर्मों के फल पाने में वह परतन्त्र है। स्वतंत्रता यह उसका स्वाभाविक गुण है। स्वतन्त्रता उचित भी हो सकती है, और अनुचित भी ! अनुचित व्यवहार को स्वतन्त्रता न कहकर मनमानी ढंग का स्वैर

आचरण कह सकते हैं । अनियमितता का स्थूल उदाहरण आज हम राजनीति में देख रहे है । स्वतन्त्रता का अनुचित उपयोग लोकसभा का कार्य बन्द, शासक को कार्य नहीं करने देना आदि आदि ! जनता को कुछ ना कुछ स्वतन्त्रता प्राप्त है, किन्तु अपनी स्वतंत्रता से जब अन्यों की स्वतंत्रता में बाधा उत्पन्न की जाती है, तो जो शासनभंजक है, Lawless है, राजा उसकी स्वतन्त्रता छीन लेता है । यदि राजा यह काम कर नहीं सका, तो ईश्वर की न्यायव्यवस्था में यह स्वतंत्रता छीन ली जाती है । इसलिए महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के दसवें नियम में लिखा है **'सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहे ।'** इस नियम को न समझना, यही सारे विवादों की जड है । फिर वह गृहस्थ हो, परिवार हो, समाज हो, आर्य समाज हो, कोई प्रान्त हो, राज्य हो, अथवा राष्ट्र हो ! इस नियम को न समझने से व्यक्ति, समाज, राज्य और राष्ट्र भी नष्ट हो सकता है । गुलाम होना, परतंत्र होना, क्या इससे कुछ अलग है ? अन्यों की स्वतंत्रता छीन लेने का अर्थ है दूसरे राष्ट्र को परतंत्र करना । महर्षि दयानन्द ही प्रथम राष्ट्रीय व धार्मिक विद्वान, दिव्यात्मा थे, जिन्होंने अंग्रेजी न्यायव्यवस्था की कडी आलोचना उनके समक्ष की थी ।

अंग्रेजों की नीति का वर्णन जार्ज बर्नार्ड शॉ ने अत्यंत उचित शब्दों में इस तरह ऐसा किया है – 'अंग्रेज व्यक्ति की प्रत्येक कृति तत्त्वनिष्ठ होती है । देशाभिमान के तत्त्वों पर वह दूसरों से युद्ध करता है, व्यापार के तत्त्वों पर वह दूसरों से ऐसा व्यवहार करता है, इतना ही नही, वह तो दूसरे का सर्वस्व तक हरन कर लेता है और वह साम्राज्यवादी के तत्त्वों पर दूसरों को गुलाम बनाता है।'

भारत का चक्रवर्ती साम्राज्य महाभारत युद्ध के पश्चात् नष्ट हुआ । भारतीय राजाओं में फूट के कारण वे एक दूसरे के शत्रु बनें और अपने ही भाइयों व सम्बन्धियों को नष्ट करने के लिए वे परकीय शासकों को निमंत्रण देकर बुलाने लगे । इसमें दोनों भी नष्ट हो गए और गुलाम बन गये । इतना होने पर भी सम्पूर्ण भारत पर कभी परकीय सत्ता का अमल नही रहा । युद्ध होते रहे । कभी स्वतंत्र, तो कभी परतंत्र हो कर जीते रहे, किन्तु अंग्रेजों के शासन के पश्चात् शहीदों की कतार बढती गई । विद्रोह बढता गया । अनेक भारतीय सपूत शहीद हो गए । अब और अधिक अन्याय सहने को इनकी आत्माओं ने नकार दिया और उन्होंने अंग्रेजों के शासन पर बडी भारी विजय पाई और आखिर हम स्वतन्त्र हो गये । सभी शहीदों का हमारा शतशः वंदन !

श्रावणी समाचार — महाराष्ट्र मे श्रावणी पर्व धुमधाम से सम्पन्न

विगत सतरह वर्षों से महाराष्ट्र की लगभग १३० आर्य समाजों में श्रावणी उत्सव मनाने की परम्परा जारी है । इस वर्ष भी विशाल रूप में उत्तर भारत से छः विद्वानों व छः भजनोपदशकों को तथा राज्य के लगभग ६० विद्वानों व भजनोपदेशकों को आमन्त्रित कर यह पर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया । सभा ने सभी आर्य समाजों के लिए निर्धारित की हुई तिथियों में इन सभी विद्वानों ने जहां अपने विद्वत्तापूर्ण प्रवचनों व व्याख्यानों द्वारा श्रोताओं को वेदज्ञान से लाभान्वित किया, वहीं आर्य भजनोपदेशकों ने अपने मधुर भजनों व गीतों के माध्यम से भक्तिमय वातावरण बनाया ।

दि. १५ अगस्त से १३ सितम्बर तक के एक माह में नगरों व देहातो की आर्य समाजों में प्रातः वेदपारायण यज्ञ, भजन, प्रवचन तथा रात्रि में व्याख्यानों के आयोजनों के साथही दोपहर विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा अन्य शिक्षा संस्थाओं में छात्रों के जीवन निर्माण हेतु विद्वानों के मौलिक प्रबोधनपूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुए ।

ऋषिवर देव दयानन्द की पावनी वैदिक विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने के उदात्त हेतु से सभा के आवाहन पर सभी विद्वामनीषी उदात्त भाव से जुट गये। उत्तरभारतीय पण्डितगण जहां अपना एक माह ऋषि के मिशन को पूरा करने हेतु अपना घर-परिवार छोडकर पधारे, वहीं प्रान्त के भी कई मान्यवर विद्वज्जनों ने भी समय दिया । इनमें से कुछ विद्वान व भजनोपदेशक एक माह, पन्द्रह दिन, दस दिन, सात दिन अथवा तीन-चार दिनों तक का समय देकर प्रचार में व्यस्त रहे । प्राप्त स्थिति अनुकूल हो या प्रतिकूल सभी ने वेदज्ञान प्रसार कार्य के उद्देश्य को सामने रखकर कर्तव्य को निभाया । एक दो आर्य समाजों को छोडकर अन्य सभी आर्य समाजों ने कार्यक्रम लिये । मेरठ से पहली बार महाराष्ट्र पधारे साधुमना तपस्वी विद्वान् पं. श्री सत्येन्द्रसिंहजी आर्य तथा प्रतिवर्ष आनेवाले भजनोपदेशक पं. संदीपजी आर्य ने सम्भाजीनगर, परली-वै., गांधी चौक लातूर, सोलापूर, इन शहरों में वेदप्रचार किया । रायपूर (म.प्र.) के विद्वान डॉ. कमलनारायणजी आचार्य तथा भजनोदेशक पं. अमरेशजी आर्य ने पुणे की वारजे मालवाडी व पिम्परी आर्य समाजों में तथा नगर, नासिक, देवलाली कॅम्प, भगुर, पंचवटी व धुलियां में कार्यक्रम सम्पन्न किये । आचार्य विद्यादेवजी (गुजरात) व पं. कर्मवीरजी आर्य ने परभणी, नांदेड, देगलूर, शहापूर, मुदखेड व धर्माबाद इन स्थानोंपर कार्यक्रम लिये । प्रखर शास्त्रार्थी पं. महेन्द्रपालजी आर्य व पं. सुखपालजी आर्य ने रेणापुर, रामनगर लातूर, शिवनखेड,

सुगांव व किल्लेधारूर में श्रोताओं को सम्बोधित किया। पं. देशराजजी आर्य (भरतपुर) व पं. लाखनसिंह आर्य (मथूरा) के उमरगा, औराद, गुंजोटी, निलंगा, औराद शहा., उदगीर में कार्यक्रम सम्पन्न हुये। गाजीयाबाद से पधारे विद्वान पं. ब्रिजेशजी शास्त्री, भजनोपदेशक पं. प्रकाशमुनिजी आर्य (खेडाखुर्द-दिल्ली) ने नांदेड व हिंगोली जिले के देहातों में जाकर प्रचार किया। सभा के उपदेशक पं. सुधाकरजी शास्त्री एवं पं. आर्यमुनिजी ने उस्मानाबाद जिले के कईं गावों वेदप्रचार किया। पं. नारायणरावजी कुलकर्णी एवं प्रतापसिंह चौहाण ने औसा, शिरूर अनंतपाळ तथा देवणी इन तालुके के कई गांवों में कार्यक्रम किये। अन्य विद्वानों में डॉ. वीरेन्द्र शास्त्री, पं. शक्तिसिंह आर्य, चैतन्य रडे, प्रा.अखिलेश शर्मा, पं. लक्ष्मणराव आर्य, दयानंद शास्त्री, पं.श्रीरामजी आर्य, पं. सुभाषजी गायकवाड, पं. ज्ञानकुमारजी आर्य, पं. प्रल्हाद मानकोसकर, अशोक कातपुरे, शिवाजी निकंम, पं. राजवीरजी शास्त्री, पं.चंद्रकांत वेदालंकार, पं. वशिष्ठ आर्य, प्रा.अरूण चव्हाण आदियों का समावेश है।

समाचार दर्पण गुरुकुल पूठ का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल पूठ (पुष्पावती) गढमुक्तेश्वर (हापुड) का वार्षिक महासम्मेलन १३, १४ व १५ मार्च २०१५ को उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें आर्य जगत् के वरिष्ठ विद्वान, सन्यासी, भजनोपदेशक तथा आर्य जन सम्मिलित हुए। स्वामी प्रणवानन्दजी के सुसान्निध्य में यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ था। श्री ज्ञानेन्द्रजी गान्धी की अध्यक्षता में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन किये, जिसमें आसन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, लाठी स्तूप, शब्दभेदी बाण, धनुर्विद्या प्रदर्शन आदि का समावेश था। यज्ञ, प्रवचन-सत्संग आदि कार्यक्रम भी सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। आचार्य स्वामी धर्मेश्वरानन्दजी ने सभी के प्रति धन्यवाद प्रकट किये।

सम्भाजीनगर में पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज, सम्भाजीनगर (औरंगाबाद) के तत्त्वावधान में १६ से २२ जून २०१५ के दौरान विशाल स्तर पर पर्जन्यवृष्टि यज्ञ का आयोजन हुआ। स्थानीय खडकेश्वर महादेव मन्दिर के प्रांगण में सम्पन्न हुए इस यज्ञ के ब्रह्मापद को प्रसिद्ध वृष्टिविशेषज्ञ डॉ.कमलनारायणजी आर्य (रायपुर) ने सुशोभित किया। डॉ.प्रद्युम्न (रांची) आर्य एवं पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य (नागपुर) ने पौरोहित्य किया। वृष्टियज्ञ का शुभारम्भ पहले दिन रा.स्वयंसेवक संघ के शहरसंघचालक डॉ.उपेन्द्रजी अष्टपुत्रे के करकमलों द्वारा ओ३म् ध्वजारोहण से हुआ। यज्ञ के दौरान लगभग ५५० यजमान

दम्पतियों ने प्रातः सायं श्रद्धापूर्वक आहुतियां प्रदान की । इस यज्ञ में यजमान के रुप में विभिन्न क्षेत्र की नामांकित हस्तियां उत्साह के साथ सम्मिलित हुई । यज्ञ में शुद्ध गोघृत तथा ८४ प्रकार की वनौषधियां का प्रयोग बडे पैमाने पर किया गया । प्रतिदिन विद्वानों के प्रवचन व भी होते रहे । वृष्टियज्ञ की पूर्णाहुति माता सुभद्राजी, सन्तोषमुनिजी, सभा के कोषाध्यक्ष उग्रसेनजी राठौर, जयकिशोरजी दोडिया, महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष श्री हरिभाऊ बागडे आदियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई । यज्ञ के दौरान दि.२१ जून को योगदिवस मनाया गया, जिसमें श्री दयारामजी बसैये एवं श्री सन्तोषजी हिरास ने योगप्रशिक्षण दिया । इस वृष्टि यज्ञ की सफलता हेतु आर्य समाज सम्भाजीनगर के पदाधिकारी सर्वश्री जुगलकिशोर दायमा (प्रधान) दयाराम बसैये (मन्त्री), एड. जोगेन्द्रसिंह चौहान, जगन्नाथ बसैये, नारायण होलिये आदियों ने विशेष प्रयत्न किये ।

नेपाल भूकम्प पीडितों के लिए आर्थिक सहायता

भारत के समीपस्थ मित्रराष्ट्र नेपाल में हालही में भूकम्प संकट आया । इस प्राकृतिक आपदा से पीडित नेपालवासियों की आर्थिक सहायता के लिए आर्य समाज, सम्भाजीनगर द्वारा समाज की विभिन्न धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं व कार्यकर्त्ताओं के माध्यम से संकलित रु.६६,५००/- की सहायता राशि भेजी गयी । आर्य समाज द्वारा चल रहे वृष्टियज्ञ में पदाधिकारियों ने भूकम्प पीडितों की आर्थिक सहायता के लिए अपील की, तब अनेकों उदारमना दानदाताओं ने श्रद्धा से अपनी अपनी राशियों प्रदान की । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाद्वारा खोले गये नेपाल भूकम्प राहतकोष के लिए यह राशि प्रो.व्यंकटेश आबदे, विजय मातोड, उग्रसेनजी राठौर, एड.भूषणभाई पटेल, सन्तोष सुरडकर, सुभद्रा माता, शान्तिदास महाराज आदियों के करकमलों से आर्य समाज सम्भाजीनगर के मन्त्री श्री दयारामजी बसैये व अन्य पदाधिकारियों द्वारा भेजी गयी ।

रोजड में योग प्रशिक्षण शिविर का समापन

पूज्य स्वामी सत्यपतिजी परिव्राजक की अध्यक्षता में वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड (गुजरात) में गत ५ से १२ अप्रैल २०१५ के दौरान अष्टदिवसीय क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ । इस शिविर में व्यस्त दिनचर्या में साधकों को क्रियात्मक योगसाधना सिखाने के साथ ही योगदर्शन के सूत्रों का अध्यापन, योग के आठ अंगों सहित विवेक, वैराग्य, अभ्यास, जप-विधि, ईश्वरसमर्पण, स्वस्वामी संबंध तथा ममत्व को हटाने जैसे सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विभिन्न योगी साधक जनों ने मार्गदर्शन किया ।

स्वामी सर्वानन्द जयन्ती समारोह सम्पन्न

आर्य जगत् के वीतराग व तपोनिष्ठ संन्यासी पू.दिवंगत स्वामी सर्वानन्दजी का ११५वां जयन्ती उत्सव गत दि.१३ अप्रैल २०१५ को सोत्साह मनाया गया। इस अवसर पर प्रात: पं.यतीन्द्र शास्त्रीजी के ब्रह्मत्व में १२ दिनों से चल रहे **सामवेद पारायण यज्ञ** की पूर्णाहुति सम्पन्न हुई। यज्ञ के दौरान विजयकुमार शास्त्री, सन्दीप आर्य, जसविन्द्र आर्य, सुरेन्द्रसिंह गुलशन आदियों ने भजन व प्रवचनों द्वारा श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध किया।

अन्तिम दिन आयोजित आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन दै.वीरप्रताप के सम्पादक श्री चन्द्रमोहनजी के करकमलों से ओ३म् ध्वजा फहराकर सम्पन्न हुआ, जिसकी अध्यक्षता सीकर (राजस्थान) लोकसभा चुनाव क्षेत्र से निर्वाचित आर्य सांसद श्री स्वामी सुमेधानन्दजी सरस्वती ने की। मुख्यातिथि के रुप में आर्यरत्न श्री सरदारीलालजी एवं श्री रामपालजी आर्य पधारे थे। अन्त में मठके अध्यक्ष श्री स्वामी सदानन्दजी ने सभी को आशीर्वाद दिये।

डॉ.धर्मेन्द्रजी को विशिष्ट संस्कृत विद्वान् पुरस्कार

सुप्रसिद्ध विद्वान एवं दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव प्रो.डॉ.धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री को उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा इस वर्ष के **विशिष्ट संस्कृत विद्वान् पुरस्कार** से सम्मानित किया गया। दि.२५ जून २१०१५ को सम्पन्न हुए विशेष सम्मान समारोह में मुख्यमंत्री श्री अखिलेशजी यादव के शुभकमलों से एक लाख रुपयों की भेंटराशि, ताम्रपत्र, स्मृतिचिन्ह एवं श्याल प्रदान कर श्री शास्त्रीजी को पुरस्कृत किया गया। इनके साथ अन्य चार संस्कृत विद्वानों को भी संस्थान द्वारा विभिन्न पुरस्कारों से अलंकृत किया गया।

डॉ.धर्मेन्द्रकुमारजी गुरुकुल गौतमनगर नई दिल्ली के होनहार यशस्वी स्नातक, ओजस्वी वैदिक विद्वान, प्रवक्ता व प्रचारक हैं।

विगत २० वर्षों से दिल्ली विश्वविद्यालयांतर्गत खालसा महाविद्यालय में संस्कृत विभागाध्यक्ष तथा तीन वर्षों से दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव पद पर रहते हुए विभिन्न नूतन कार्य योजनाओं के माध्यम से संस्कृत के प्रचार व प्रसार में काफी योगदान दे रहे हैं। इस उपलक्ष्य में श्री शास्त्रीजी का आर्य जगत् की ओर से हार्दिक अभिनन्दन!

मुम्बई में याज्ञिक परिवार सम्मानित

आर्य पुरोहित सभा, मुम्बई का ११ वां वार्षिकोत्सव ५ अप्रैल को मनाया गया, जिसमें बृहद्यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं याज्ञिक (अग्निहोत्री) परिवार सम्मान समारोह आदि कार्यक्रमों का आयोजन हुआ । यज्ञ के ब्रह्मापद को आचार्या सरस्वती ने सुशोभित किया । इस समारोह में सर्वश्री मिठाईलाल सिंह, वेदप्रकाश गर्ग, प्रतापसिंह शूरजी, हरीश आर्य, अरुण अबरोल, संगीत शर्मा तथा मुम्बई की महापौर श्रीमती अलकाताई केरकर आदि सम्मिलित हुए ।

इस अवसर पुरोहित सभा की ओर से लगभग ७५ अग्निहोत्री (याज्ञिक) परिवारों को प्रशस्तिपत्र, केशरी उपवस्त्र आदि देकर मान्यवरों के करकमलों से सम्मानित किया गया । समारोह में सर्वश्री विश्वनाथ शर्मा, परेशभाई पटेल, सन्दीप आर्य, श्रवण गुप्ता, डॉ.सोमदेव शास्त्री भी उपस्थित थे । समारोह का संचालक आचार्य नरेन्द्र शास्त्री ने किया तथा पं.नामदेव शास्त्री ने सभी के प्रति धन्यवाद प्रकट किये । कार्यक्रम की सफलता के लिए पं.नचिकेता शास्त्री, पं.भूपेन्द्र शास्त्री, पं.महेन्द्र शास्त्री, पं.नरेन्द्र शास्त्री एवं श्रीमती सरोज गुप्ता ने प्रयत्न किये ।

उडीसा में पांच स्थानों पर चरित्र निर्माण शिविर

युवक–युवतियों के नवनिर्माण हेतु उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में गुरूकुल आभसेना की ओर से ग्रीष्मकालीन अवकाश में राज्य के निम्नांकित पांच स्थानों पर एक युवतियों के लिए तथा चार युवकों के लिए चरित्रनिर्माण शिविर सम्पन्न हुए ।

१) नुआपडा अभयारण्य के समीपस्थ माता परमेश्वरी कन्या छात्रावास में दि. २६ अप्रैल से २ मई तक आयोजित कन्या संस्कार शिविर में ६० युवतियां सम्मिलित हुई ।

२) स्वामी ओमानन्द छात्रावास नुआंगा कन्धमाल में २ से ८ मई तक के आर्ययुवक शिविर में ६० छात्र सहभागी हुये ।

३) परममित्र आर्ष गुरूकुल गेरवानी रायगढ में ३ से ९ मई तक आर्यवीर दल शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें मार्गदर्शक डॉ. स्वामी देवव्रतजी आचार्य के सान्निध्य में ९० छात्र प्रशिक्षित हुये ।

४) आदिम आश्रम कुन्दुली कोरापुट में ६ से ११ मई तक युवक शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें ७० छात्र सम्मिलित हुये ।

५) आर्य समाज सम्बलपुर में ११ से १७ मई तक के शिविर हुआ, जिसमें ५० छात्रों का सहभाग रहा । इन सभी शिविरार्थियों को पू. स्वामी धर्मानन्दजी, स्वामी व्रतानन्दजी, उपाचार्य डॉ. कुंजदेवजी, आचार्य रणजीतजी आदियों के आशीर्वाद प्राप्त हुए ।

राव हरिश्चन्द्र आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट नागपुर द्वारा होगा

विद्वानों को तीन पुरस्कारों का वितरण

आर्य जगत् के वैदिक धर्म प्रचारकों, जीवनदानियों, विद्वानों व भजनोपदेशकों के सम्मान में नागपुर (महाराष्ट्र) स्थित सेवाभावी संस्थान राव हरिश्चंद्र आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा विगत ३-४ वर्षो के लिए निम्नलिखित तीन-तीन पुरस्कारों का वितरण कुछ ही दिनों में होगा । **१) आर्यरत्न पुरस्कार -** सृ. सं. १९६०८५३११३/१४/१५/१६ के लिये पुरस्कार संख्या ४ प्रत्येक पुरस्कार का एक लाख रूपये (१०,००,०००) चार विद्वान्, जीवनदानियों से आवेदनपत्र आमंत्रित हैं, जिनका पूरा जीवन परोपकार, त्याग, तपस्या, समाजसेवा, योगशिक्षा, गौसंवर्धन एवं आर्ष प्राच्यविद्या के प्रसार व प्रचार में नैष्ठिक जीवन के साथ निःस्वार्थ भाव से उल्लेखनीय योगदान रहा है ।

२) आर्यविभूषण पुरस्कार - सृ सं. १९६०८५३११४/१५/१६ के लिये पुरस्कार संख्या ३, प्रत्येक पुरस्कार इक्यावन हजार रूपयों (५१,००० रूपया) का उन विद्वानों को दिया जायेगा, जिनका पूरा जीवन वेद-प्रचार, प्रसार, लेखन, वैदिक साहित्य लेखन व समाजसेवा में लगा हो ।

३) आर्यगौरव पुरस्कार - सृ. सं. १९६०८५३११४/१५/१६ के लिये पुरस्कार संख्या ३, प्रत्येक पुरस्कार इक्कीस हजार रूपयों (२१,०००) यह पुरस्कार उन भजनोपदेशकों व प्रचारकों को दिया जायेगा, जिनका पूरा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार मे लगा रहा है ।

उपर्युक्त पुरस्कारों के लिए सुपात्र व्यक्तियों के आवेदनपत्र उनके परिचय व जीवन कार्य विवरण के साथ मंगवाये जा चुके है । पुरस्कारों के लिये विद्वानों का चयन एक विशेष चयनसमिति के द्वारा होगा

डॉ.गर्जे के ग्रन्थ का विमोचन

महाराष्ट्र के वैदिक विद्वान डॉ.चन्द्रकान्तजी गर्जे द्वारा लिखित **चारों वेदों के समान मन्त्रों का तात्विक चिन्तन** इस ग्रन्थ का विमोचन हरिद्वार में सम्पन्न हुआ। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के तत्वावधान में दि.१३ से १५ मार्च को वेदसंगोष्ठी आयोजित की गयी थी । इस अवसर पर विभिन्न वैदिक मनीषियों व विद्वानों की उपस्थिति में आचार्य श्री बालकृष्णजी के शुभ करकमलों से इस ग्रन्थ का विमोचन किया गया । प्रस्तुत ग्रन्थ को सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान प्रो.डॉ.महावीरजी आचार्य द्वारा प्ररोचना प्राप्त होने से यह ग्रन्थ और भी अधिक मौलिक बन चुका है।

मुम्बई में जीवननिर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में दि. २ से १० मई के दौरान आर्य समाज, मुलुण्ड कालोनी के प्रांगण में आवासीय **'आर्यवीर चरित्र निर्माण शिविर'** उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। इस शिविर में सर्वश्री धर्मवीर आर्य (कुरूक्षेत्र) संतोष राजभर, पं. नरेन्द्र शास्त्री, पं. धर्मधर आर्य, कल्पेश आर्य, ज्ञानप्रकाश आर्य, नरेश शास्त्री, आदियों ने मार्गदर्शक के रूप में भूमिका निभाई। इन विद्वानों ने शिविरार्थियों को योगासन, प्राणायाम व व्यायाम के साथ ही वैदिक सिद्धान्तों का भी प्रशिक्षण दिया।

समापन समारोह में सर्वश्री विनोद ओवराय, राजन खन्ना, चन्द्रभूषण गिरोगा, सुरेश यादव, सभाप्रधान अरूण अब्रोल, श्रीमती जयाबेनजी आदियों ने बच्चों को पुरस्कृत कर उन्हें सम्बोधित किया।

होशंगाबाद में 'आचार्यपद रजतजयन्ती' समारोह

आर्य जगत् के तपस्वी विद्वान स्वामी ऋतस्पतिजी (जगद्देवजी नैष्ठिक) को आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय होशंगाबाद के आचार्यपद ग्रहण करते हुए आजकल २५ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इस उपलक्ष्य में आगामी दि. २७, २८ व २९ नवम्बर २०१५ को गुरूकुल में **आचार्यपद रजत रजन्ती समारोह** का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर लगभग २५ कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। अधिक जानकारी के लिए आचार्य योगेन्द्रजी याज्ञिक (०९४२४४७१२८८, ०९९०७०५६७२६) से सम्पर्क करें। समारोह में गुरूकुल के सभी स्नातकों, हितैषियों व गुरूकुलप्रेमियों को सपरिवार पधारने का आवाहन गुरूकुल समिति की ओर से किया गया है।

अकोला में व्यक्तित्व विकास शिविर सम्पन्न

आर्य समाज अकोला की ओर से गत दि. १५ से १९ अप्रैल तक आवासीय **'व्यक्तित्व विकास व चरित्र निर्माण शिविर'** सम्पन्न हुआ। इस शिविर में लगभग ८० बच्चों ने भाग लेकर आदर्श दिनचर्या, व्यायाम आसन, खेलकूल, अनुशासन, सुसंस्कार, निसर्गोपचार तथा मानवीय मूल्यों का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

शिविर में ब्र. अरूणकुमार आर्य, शैलेशकुमार, डॉ. धनलालजी शेन्द्रे, स्वामी ब्रह्मानन्दजी (वडलूर) आदियों ने प्रशिक्षण दिया। आर्य समाज अकोला के सभी पदाधिकारियों ने शिविर की सफलता हेतु परिश्रम उठाये।

परोपकारिणी सभा की महाराष्ट्र वेदप्रचार यात्रा

युगपर्वतक महर्षि स्वामी दयानन्द के गृहत्याग के पश्चात् उनकी पहली और अन्तिम महाराष्ट्र व गुजरात यात्रा को इस वर्ष १४० वर्ष पूर्ण हो गये। इस उपलक्ष्य में अजमेर की परोपकारिणी सभा ने दि. २१ जून से ९ जूलाई २०१५ के दौरान वेदप्रचार यात्रा का आयोजन किया। सभा के का.प्रधान डॉ. धर्मवीरजी तथा मन्त्री श्री ओममुनिजी के नेतृत्व में लगभग ३० आर्यजनों का प्रचारमण्डल एक वाहन के साथ इस यात्रा के लिए चल पडा।

इस यात्रा में आर्य जगत् के इतिहासवेत्ता प्रो.राजेन्द्रजी जिज्ञासु, आचार्य सोमदेवजी, आचार्य कर्मवीरजी, वासुदेव आर्य, आचार्य ब्र. नन्दकिशोरजी, पं. इंद्रजितदेवजी, पं. नोबतरामजी, पं. भूपेन्द्रसिंहजी, श्री कन्हैय्यालालजी तथा ऋषिउद्यान गुरूकुल के ६-७ ब्रह्मचारी भी सम्मिलित हुए।

ये सभी यात्रीगण दि. २३ जून को नासिक पहुंचे। ऋषिवर दयानन्द नासिक में जहां पर रहें, उस स्थान को देखा तथा इन विद्वानों ने आर्यजनों को मार्गदर्शन किया। भगूर, देवालाली कैम्प, पुणे की पिम्परी व वारजे मालवाडी तथा अन्य आर्य समाजों में भी इन विद्वानों ने सम्बोधित किया। तत्पश्चात् यह वेदप्रचार मण्डल मुम्बई की ओर चल पडा। जिस काकडवाडी में आर्य समाज की स्थापना हुई, वहां पर भी ये लोग पहुंचे। इसके बाद गुरूकुल सूपा, सूरत, भरूच, बडोदरा, बडौदा, अहमदाबाद, भावनगर, गुरूकुल सोनगढ, जूनागढ, पोरबन्दर, राजकोट आदि स्थानों के पश्चात् ये सभी ऋषि की जन्मस्थली टंकारा पहुंचे।

शोक समाचार स्वामी सुमेधानन्दजी का देहावसान

दयानन्द मठ, चम्बा (हिमाचल) प्रधानाचार्य श्री स्वामी सुमेधानन्दजी सरस्वती का दि.५ अगस्त २०१५ को देहावसान हो गया। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार व गुरूकुल शिक्षा पद्धति को प्रवाहित करने में आपका काफी योगदान रहा है।

बचपन से ही वैराग्यवृत्ति धारणकर आप महर्षि दयानन्द के अनुगामी बने थे। वीतराग संन्यासी पू. स्वामी सर्वानन्दजी से संन्यास दीक्षा लेकर हिमाचल की घाटियों में वैदिक विचारों को प्रसृत करने हेतु तत्पर रहें। हिमाचल के सुरम्य पर्वतीय प्रदेश में रावी नदी के तट पर स्थित चम्बा में पू. स्वामी सर्वानन्दजी द्वारा स्थापित दयानन्द मठ को संचालित किया और वहां पर गुरूकुल के माध्यम से वेद,व्याकरण दर्शन, संस्कृत साहित्य की शिक्षा का प्रसार किया। अनेकों बृहद्यज्ञों के भी वे आयोजक व ब्रह्मा रहे।

साहित्य प्रचारक जमनादासजी आर्य नही रहें

आर्य जगत् के कर्मठ साहित्य सेवी व आर्ष ग्रन्थ प्रचारक श्री जमनादासजी हजारीमलजी आर्य (कर्मवीरमुनिजी) का गत ३१ जूलै २०१५ को वृद्धापकालीन रूग्णावस्था के कारण निधन हो गया। वे ८२ वर्ष के थे।

श्री आर्यजी अपने पश्चात् दो सुपुत्र, पुत्रवधुएँ तथा पौत्रादियों को छोडकर संसार से विदा हो गये। अल्पदरों में वैदिक साहित्य विक्रेता व लगनशील ऋषिभक्त के रूप में आपकी सर्वत्र विशेष पहचान थी। जगह-जगह घूमकर तथा विभिन्न आर्य महासम्मेलनों में वार्षिकोत्सवों तथा कार्यक्रमों में आप आपना विशाल पुस्तकालय लगाते थे। लगभग सारा साहित्य आधी कीमत पर बेच देते थे। ऋषि कृत सत्यार्थ प्रकाश यह अमरग्रन्थ वे मात्र १० रू. वितरीत करते थे। अन्य ग्रन्थ विक्रेताओं की अपेक्षा इनका साहित्य सही अर्थों में स्वाध्यायी जनों के लिये संतोषजनक रहता था। अमरावती (महाराष्ट्र) में इनकी कपडों की दुकान है। इस व्यवसाय में जो कमाई होती थी, उसका एक हिस्सा वैदिक साहित्य को आधी कीमत में बेचने हेतु मंगाते थे। कई ग्रन्थ तो आधे से भी आधे मूल्य में बेचते और वैदिक साहित्य जन-जन तक पहुँचाते थे। इस प्रकार के लगनशील साहित्य सेवी दुर्लभ ही होंगें। वे सुस्वभावी, नम्र, स्नेहशील, मृदुभाषी और आर्यविचारों के अभिमानी थे। श्री आर्यजी मूलतः सिन्ध प्रांत (वर्तमान पाकिस्तान) के निवासी थे। देश के विाजन के पश्चात् वे अमरावती आये और वहां पर न्यू प्रताप क्लॉथ सेंटर (जवाहर नगर, तखतमल इस्टेट) यह दुकान खोलकर कपडों का व्यापार शुरू किया। दुकान चलाते-चलाते वैदिक साहित्य विक्री केंद्र भी शुरू किया। लेकिन आपने इसे व्यावसायिक रूप नही दिया। केवल ऋषि दयानन्द की वैदिक विचाराधारा को प्रचारित करने का पवित्र उद्देश्य रखा। वे एक स्वाध्यायशील आर्यगृहस्थ थे। १९९५ में उन्होंने स्वामी अमृतानन्दजी से वानप्रस्थ दीक्षा ली और कर्मवीरमुनि यह नाम धारण किया। इस तरह जीवन के अन्त तक साहित्य प्रसार का काम करते रहे।

दिवंगत श्री मुनिजी के पार्थिव पर वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किये गये। उनकी अन्तयात्रा में विदर्भ के विभिन्न नगर व देहातों से आर्यकार्यकर्त्ता सम्मिलित हुये। आर्य समाज अकोला, विदर्भ-मध्यप्रदेश प्रतिनिधि सभा तथा महाराष्ट्र आर्य प्र.सभा के पदाधिकारियों ने स्व. श्री मुनिजी को भावपूर्ण श्रद्धाजंलि अर्पण कर परिवार के प्रति शोकसंवेदनाएँ प्रगट की हैं।

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

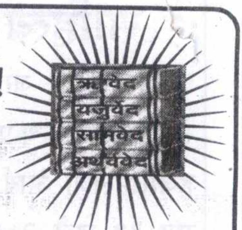

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन–जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन–एच. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

– मानवकल्याणकारी उपक्रम –

- ‘वैदिक गर्जना’ मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव–‘मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर’
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान – विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ–जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ–कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

सुभाषित सन्देश — चारित्र्य हेच भूषण

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो ।
ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः ।
अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निर्व्याजता ।
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम् ॥

अर्थ – ऐश्वर्याचे भूषण सौजन्य, शौर्याचे बडबड न करणे, ज्ञानाचे शांती, विद्येचे नम्रता, द्रव्याचे (धनाचे) सत्पात्री दान करणे, तपाचे क्रोध नसणे, सामर्थ्याचे क्षमा आणि धर्माचे निष्कपटपणा याप्रमाणे ही भूषणे आहेत आणि उत्तम चारित्र्य हा तर सर्वांचेच कारण असून परम भूषणही आहे. (भर्तृहरीचे नीतिशतक)

दयानंदांची अमृतवाणी — स्वदेश प्रेम

१) या आर्यावर्त्तासारखा देश जगाच्या पाठीवर दुसरा नाही. म्हणून या देशाचे सुवर्णभूमी असे नाव पडले. २) हा आर्यावर्त देश खरा परीस आहे, त्याला इतर लोखंडरूपी दरिद्र देश स्पर्शमात्रे सोन्याचे अर्थात श्रीमंत होतात. ३) सृष्टी उत्पत्ती पासून पाच हजार वर्षापूर्वी महाभारतापर्यंत आर्य लोकांचे सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात संपूर्ण पृथ्वीवर राज्य होते.४) आम्हां सर्वांचे कर्तव्य आहे की, ज्या देशाच्या मातीतून आपला देह बनला आहे. आणि त्याचे पोषण आजही होत आहे आणि पुढेही होणार आहे. त्या राष्ट्राची उन्नती तन, मन, धनाने सर्वांनी मिळून केली पाहिजे. ५) स्वदेशीय राज्य हेच सर्वतोपरी उत्तम राज्य होय. ६) जो शरीराने गुलाम आहे, तो आध्यात्मिक स्वातंत्र्य कधीच मिळवू शकत नाही. ७) गुलाम होण्यापूर्वी कोणत्याही देशाची चारित्र्य विषयक घसरण झालेली असते.

(सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथातील विविध भागातून संकलन)

हैद्राबाद संग्रामकालीन आर्यसमाजाची ज्वलंत चळवळ

– (स्व.) वसंत ब. पोतदार

हैद्राबाद स्टेटमध्ये इ.स. १९२० साली आर्य समाजाची स्थापना झाली आणि पद्धतशीर कार्य करणाऱ्या दोनशे शाखा दोन तीन वर्षात उघडण्यात आल्या. निझामी राज्यात हैदराबादचे बॅ. विनायकराव कोरटकर हे आर्य समाजाचे अध्यक्ष होते. बन्सीलालजी मुख्यमंत्री होते. त्यांनी उदगीरला आपले मुख्य कार्यालय उघडले. 'वैदिक संदेश' नावाचे वृत्तपत्र सोलापुर येथून प्रसिद्ध करण्यास सुरूवात केली.

'वैदिक संदेश' निझाम स्टेटमध्ये सर्वत्र पोचावे अशी व्यवस्था केली. अत्यंत शिस्तबद्ध व ध्येयवादी अशी ती संघटना होती. मातृभूमीचे प्रेम आणि वैदिक धर्मावरील निष्ठा या दोन महत्वाच्या मानबिंदूसाठी प्रत्येक आर्यसमाजी प्राणाची बाजी लावण्यास तयार असतो.

हैदराबाद राज्यातील बहुसंख्य समाजाला कोणी वाली नव्हता. उलट हिंदूंचा नायनाट करण्यासाठी निघालेली खाकसार पार्टी, निझाम सेना, इत्तेहादूल संघटना, दीनदार सिद्दीक याचे धर्मप्रचारक अनुयायी यांचा सर्वत्र थैमान चालू होता. या सर्व गोष्टींचा प्रतिकार करण्यासाठी हिंदूंची आर्यसमाज ही एकमेव संघटना आहे, हे सर्वांना कळले. उत्तर हिंदुस्थानातून शेकडो आर्यसमाजी कार्यकर्ते मृत्यूची तमा न बाळगता निझाम राज्यात आल्यामुळे त्यात विशेष करून मराठवाड्यात आर्यसमाजी नेते व कार्यकर्ते निझामाविरूद्ध लढा देण्यास तयार झाले.

दि. २/९/१९२९ रोजी दीनदार सिद्दीक पार्टी नावाची इस्लाम धर्म प्रसारक संस्था हैदराबाद राज्यात स्थापन झाली. दीनदार सिद्दीक आपण स्वतः चन्नबसवेश्वराचे अवतार आहोत आणि बसवेश्वराच्या तत्वज्ञानाचा प्रसार करण्यासाठी मुस्लिम धर्म आहे, असे प्रतिपादन करून दीनदार सिद्दीक पार्टी व त्याच्या अनुयायी लोकांनी हिंदूना मुसलमान धर्माची दीक्षा देण्याचे कार्य सुरू केले. आपल्या प्रचारात त्यांनी राम आणि कृष्ण या हिंदू अवतारी पुरूषांचा अवमान करून इस्लाम हाच एक जगातील सर्वश्रेष्ठ धर्म आहे असा जोमाने प्रचार सुरू केला. त्यामुळे इ.स. १९२९ साली आर्यसमाजाच्या चळवळीला चांगली धार आली. इ. स. १९३० मध्ये तर हैदराबाद स्टेटमध्ये प्रत्येक जिल्ह्यात आर्यसमाज संघटना स्थापन झाल्या. भाई बन्सीलाल आणि श्यामलाल या उदगीरच्या दोघां बंधूनी संस्थानात फार मोठे कार्य केले. हिंदू समाजातील दुबळेपणा नष्ट करून त्याला स्वाभिमानाने ताठ उभे राहण्यास हैदराबाद राज्य आर्य समाज प्रतिनिधीचे

प्रधान बॅ. विनायकरावजी विद्यालंकार, पं.नरेंद्रजी आर्य आदींनी यांनी शिकविले. आर्य समाजाची ही चळवळ आपल्या राज्यात फोफावत असल्याचे बघून निझाम सरकारची वाकडी नजर आर्य समाजावर वळली. इ. सन १९३५ मध्ये निलंगा येथील हवनकुंड व आर्यसमाजमंदिर सरकारने आपल्या गुंडामार्फत उध्वस्त केले. निझामी पोलिस कोणाच्या हातात **'सत्यार्थ प्रकाश'** हा ग्रंथ दिसला की त्यास ताबडतोब अटक करीत. निलंग्याच्या घटनेमुळे शेषरावजी वाघमारे (पिताजी-आनंदमुनी) हे आपल्या धाडशी लोकासह पेटून उठले. शेषेरावजी वाघमारे अत्यंत निर्भय, धाडशी आणि संघटनाकुशल बुद्धिमान नेते ! त्यांनी हजारो लोकांना अत्याचाराचा बदला घेण्यासाठी गावोगाव शस्त्रसज्ज आर्यसमाज संघटना स्थापन करण्यास प्रवृत्त केले.

भाई बन्सीलालजी, श्यामलालजी, शेषरावजी, दत्तात्रय प्रसाद, गोपाळदेव शास्त्री आदी आर्यसमाजच्या कार्यकर्त्यांनी गावोगाव फिरून हिंदूंना वैदिक धर्माच्या ध्वजाखाली हत्यारासह एकत्रित केले. असंख्य गावात आर्यसमाज मंदिरे स्थापन करण्यात आली. गावावर इत्तेहादूल पार्टी किंवा रझाकार यांच्याकडून आक्रमण होणार आहे, अशी बातमी आली की आर्यसमाज मंदिरातली घंटा वाजू लागे ! घंटेचा आवाज ऐकताच घराघरातील पुरूष, १८-२० वर्षाची तरूण कोवळी पोरे काठ्या, कुऱ्हाडी, भाले-बर्च्या, तलवारी, बंदुका घेऊन आर्यसमाज मंदिराकडे धावत येत. पाच दहा मिनिटात मुकाबल्यासाठी शिस्तबद्धपणे सज्ज राहत ! खाकसार पार्टी, दीनदार सिद्दीक पार्टी, इत्तेहादूल संघटना आणि रझाकार यांच्या पाठीशी सरकार असल्यामुळे हे सर्व लोक हिंदूविरूद्ध बेफामपणे वागत. हिंदू व्यक्तीने रोहिले किंवा पठाण यांना सहजपणे जरी काही म्हटले तर ते ताबडतोब बंदुकीलाच हात घालीत आणि गोळी घालून ठार मारण्याची धमकी देत !

हिंदूंना बाटविण्याचे प्रमाण शिस्तशीर चालू होते. कारण त्यासाठी सरकारचे साहाय्य व प्रोत्साहन होते. सरकारच्या वतीने तीनशे मौलवी पगार देऊन या कामावर नेमलेले होते. या चळवळीस 'तबलीत्' व 'तंजीम' चळवळी असे म्हणतात. निझामाने पगारी मौलवी नेमून हिंदू-मुसलमान समाजात शांतता राखली जावी म्हणून गावोवावी **'अमन कमिटी'** (शांतता कमिटी) ही नेमल्या होत्या ! या अमन कमिट्या म्हणजे सर्वांना दिसावे, असे नाटक होते. पगारी मौलवी महारवाड्यात नेहमी हिंडून अस्पृश्य लोकांना हिंदूविरूद्ध चिथावणी देत असत. हे मौलवी मुसलमान गुंडांनाही चिथावून सोडत. ते गुंड कुरापत काढून दंगे उत्पन्न करीत आणि सरकारी नौकर त्यांचीच बाजू घेत.

उदा. तालुका कळंब गावाजवळील अंदुर नावाच्या गावी एक खाटीक गाय मारून तिचे मास विकण्याकरिता बाजारात बसला. तेंव्हा हिंदूनी त्यास हरकत घेतली. 'वाटले तर तू तुझ्या घरात बसून गोमांसाची विक्री कर पण येथे भर रस्त्यात नको.' तेव्हा तो खाटीक गांगरला. पोलिस पाटलानेही त्याच्याविरूद्ध फौजदाराकडे तक्रार केली, पण फौजदार साहेबांनी तर कमालच केली ! तो स्वतः त्या गावी हजर झाला आणि त्याने त्या खाटकास मारूतीच्या कट्टयावर नेऊन बसविले. हिंदू लोक फार चिडले व दंगा होण्याचे चिन्ह दिसू लागले. तेव्हा फौजदाराने त्यास कट्टयावरून खाली देवळासमोर आणून बसविले ! असे होते सरकारी अधिकारी !.

अशा घटनामुळे आर्यसमाजचे लोक अधिक संघटीत झाले. तर इत्तेहादूल पार्टी आणि मुस्लिम जमातीमधील गुंड अधिक चेकाळून गेले. इ.सन.१९३८ मध्ये गुंजोटीस वेदप्रकाशचा खून पाडण्यांत आला. वेदप्रकाशच्या हत्येची वार्ता कळताच भाई बन्सीलाल आणि वीरभद्रजी आर्य तात्काळ गुंजोटीस आले. पोलिसांनी त्यांना अटक केली !

वेदप्रकाशचा खून हे हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील पहिले बलिदान होय! त्यानंतर भाई शामलालजींना खराब अन्नपाणी देऊन त्रास देण्यात आला. आजारी असतांना दवाखान्यात पाठवले नाही. जेलमध्येच शामलालजीना विषप्रयोगाने मारण्यात आले !

हैदराबाद राज्यात इ. सन १९३८-३९ या दोन वर्षात अनेक शहरात हजारोच्या संख्येने आर्य समाजी लोकांनी सत्याग्रह केला. या सत्याग्रहास हिंदुस्थानातील जनतेने पाठिंबा द्यावा म्हणून सोलापूर येथे माधवराव अणे यांच्या अध्यक्षतेखाली एक परिषद घेण्यात आली. परिषदेत 'हैदराबाद निषेध दिन' पाळण्यात यावा, असा एकमताने ठराव पास झाला. सर्व हिंदुस्थानभर हैदराबाद निषेध दिन आला. हिंदूस्थानातून कांही आर्य समाजी सत्याग्रहात भाग घेण्यासाठी हैदराबाद स्टेटमध्ये रवाना झाले. सोलापुर, राजस्थान, दिल्ली, नागपूर, उत्तरप्रदेश, रावळपिंडी येथून अनेक कार्यकर्ते हैदराबादमध्ये दाखल झाले. असंख्य सत्याग्रहींना अटक करून जेलमध्ये घातले. अनेकांना फटक्याची शिक्षा देण्यात आली. वाईट अन्नपाणी दिल्यामुळे अनेकजण आजारी पडले. त्यात कहर म्हणजे इत्तेहादूल संघटनेतील गुंड, पोलिसांच्या समक्ष जेलमध्ये घुसून मारहान करीत या अत्याचारात सोलापूरच्या सदाशिव विश्वनाथ पाठक हैदराबाद जेलमध्ये दि. १२-८-१९३९ रोजी मरण पावला. राजस्थानचे स्वामी ब्रह्मानंदजी चंचलगुडा जेलमध्ये मृत्युमुखी पडले. दिल्लीचे शांतिप्रकाश हैदराबाद जेलमध्ये दि. २७-७-१९३९ रोजी मृत्यू पावले. नागपुरचे

पुरूषोत्तम प्रभाकर हैदराबाद जेलमध्ये दि. १६-१२-१९३८ रोजी, उत्तरप्रदेशहून आलेले मलखानसिंग हैदराबाद जेलमध्ये दि.१-७-१९३९ रोजी रावळपिंडीचे पंडित परमानंदजी हैदराबाद जेलमध्ये दि. ५-४-१९३९, उत्तर प्रदेशचे स्वामी कल्याणानंदजी गुलबर्गा जेलमध्ये दि. ८-७-१९३९ , रोजी बेंगलोरचे स्वामी सत्यानंदजी चंचलगुडा जेलमध्ये दि. २८-४-१९३९, रोजी विष्णु भगवंत अंदुरकर चंचलगुडा जेलमध्ये दि. २-५-१९३९, व्यंकटराव कंधारकर वकील निजामाबाद जेलमध्ये दि. ९-४-१९३९ रोजी मृत्युमुखी पडले. एकूण २३ व्यक्तींना जेलमध्ये हौतात्म्य आले !

उमरी जिल्हा नांदेड येथे गणपतराव, गंगाराम आणि दत्तात्रय या तीन आर्य समाजी प्रचारकांना पठाणांनी दगडाने ठेचून मारले !

इ. स. १९४२ मध्ये उदगीर येथे बॅ. विनायकरावजी विद्यालंकार यांच्या अध्यक्षतेखाली एक परिषद भरली. या परिषदेत निझामी पोलिसांच्या व रझाकारांच्या अमानुष अत्याचाराच्या सर्व घटकाबद्दल निझाम सरकारला इशारा देण्यात आला. तेव्हा पोलिस व इतर संघटनाकडून ठिकठिकाणी हिंदूच्या घरांवर, दुकानावर हल्ले चढवले गेले. हुमनाबाद येथील एका मिरवणुकीवर पोलिसांनी गोळीबार करून पाच जणांस ठार केले.

इ.स. १९४३ मध्ये निजामाबाद येथे पुन्हा आर्य समाजाची परिषद घेण्यात आली. आर्य समाज चळवळीतील व्यक्तीची प्रत्येक देशावरील, धर्मावरील आणि ध्येयावरील निष्ठा अढळ आणि वर्तणूक शिस्तबद्ध होती. या परिषदेत पंचवीस हजार सैनिकांचे एक दल स्थापन करण्याचा निर्णय घेण्यात आला. तसेच अनेक ठिकाणी अधिकाधिक पाठशाळा काढून लढ्यासाठी, देशावर व वैदिक धर्मावर निष्ठा ठेवणारे शिस्तबद्ध तरूण अशा पाठशाळेतून बाहेर पडावेत असा निर्णय घेण्यात आला.

निझाम सरकारने आर्य समाज धर्माची दीक्षा घेतलेल्या सरकारी नोकरांना कामावरून काढून टाकण्याचे फर्मान काढले. एवढेच नव्हे तर सरकारी नोकर आर्य समाजी व्यक्तीबरोबर बोलत बसल्याचे दृष्टीस पडले तर त्याना ताब्रडतोब नोकरीतून काढून टाकावे अशा सर्व अधिकाऱ्यांना सूचना दिल्या गेल्या होत्या एकूणच निझाम सरकारचे आर्यसमाजी लोकाबद्दल अत्यंत कडक धोरण होते.

लातूर येथील एका नवीन जोडप्याला मुद्दाम वारंवार पोलिस ठाण्यावर बोलावणी येत असे. हे जोडपे त्रासून गेले ! पोलिसांच्या त्रासातून त्यांची मुक्तता करण्यास कोणी समर्थ आहे ? असे दिसेना, तेव्हा एका हुशार माणसाने तुम्ही 'आर्य

समाजी' व्हा असा त्यांना सल्ला दिला. त्याप्रमाणे ते आर्य समाजी बनले आणि आश्चर्य हे की दुसऱ्या दिवशी त्यांना ठाण्यावर बोलवण्यासाठी कोणी पोलीस जमादार आला नाही.

इ.स. १९२४ मध्ये उस्मानाबाद जिल्ह्यात आर्य समाजाची स्थापना करण्यात आली. केशवराव कोरटकर, अघोरनाथ चटोपाध्याय, श्रीपादराव सातवळेकर यांच्या नेतृत्वाखाली उस्मानाबाद जिल्ह्यात अनेक ठिकाणी आर्य समाज संघटना उभी करण्यात आली. आर्य समाज मंदिरे उघडण्यात आली, बापूराव मास्तर, रामभाऊ मैंदरकर, तुळजाराम सुरवसे यांनी उस्मानाबाद जिल्ह्यात राजकीय, सामाजिक आणि धार्मिक कार्यास गती दिली. यांच्या सोबत सन्मित्र समाजाचे दत्तोपंत जिंतुरकर, बलभीमराव हिंगे, ग्यानुराव साळुंके, डांगे, देविदासराव मुरूमकर, पुरूषोत्तमराव माशाळकर यांनी स्वातंत्र्य लढ्याची तयारी म्हणून व्यायामशाळा काढून बलोपासना सुरू केली. महाराष्ट्र समाजाचे कार्यकर्ते द. या. गणेश, न.प. मालखरे, शंकर नायगावकर, चंदुलाल गांधी, सुपेकर, जिंतुरकर यांनी गावोगाव जाऊन जनजागृतीचे कार्य केले, स्वतः सत्याग्रहात भाग घेतला. त्यांना शिक्षाही झाली.

याच सुमारास सोलापूरला दयानंद कॉलेजची स्थापना झाली. मराठवाड्यातील लोकांना सोलापूर हे हैदराबादपेक्षा शैक्षणिकदृष्ट्या व आर्थिकदृष्ट्या सोयीचे असल्यामुळे दयानंद कॉलेजमध्ये मुलांची संख्या भराभर वाढू लागली. इंग्रजांविरूद्ध व निझामशाही विरूद्ध पुकारलेल्या स्वातंत्र्य संग्रामासाठी तरूणांना प्रेरणा देण्याचे कार्य या कॉलेजने केले, हे उघड सत्य आहे. कॉलेजचा विद्यार्थी आर्य समाजाच्या विचाराने भारून जाऊन निझामाविरूद्ध झेंडा सत्याग्रह व वंदेमातरम् सत्याग्रहात हिरिरीने भाग घेऊ लागला. दयानंद कॉलेजमध्ये मराठवाड्यातून आलेल्या विद्यार्थ्यांनी **हैदराबाद स्टुडंट्स युनियन** ची स्थापना केली. बॅ. विनायकरावजी विद्यालंकार पंडित नरेंद्रजी, भाई बन्सीलालजी आदी आर्य समाजी नेत्यांचे या युनियनच्या वतीने कॉलेजमध्ये भाषणे होऊ लागली. पुढे गांधीजींच्या सांगण्यावरून **'कॉलेज छोडो'** आंदोलनास उग्र स्वरूप आले व विद्यार्थी भराभर कॉलेजच्या बाहेर पडू लागले ! उस्मानाबाद जिल्ह्याच्या सरहद्दीवरील प्रत्येक शिबिरात दयानंद कॉलेजचा विद्यार्थी आघाडीवर असल्याचे आढळून येते. **'आधी स्वराज्य मग शिक्षण'** या ध्येयाने हैदराबाद संस्थानात, हैदराबाद शहरापर्यंत दयानंद कॉलेजचे विद्यार्थी सत्याग्रहासाठी जाऊन पोचले. त्या काळातील प्रिन्सिपॉल श्रीराम शर्मा ज्यांची जगातल्या प्रख्यात इतिहासकारात गणना करण्यात येते. त्यांनी

विद्यार्थांना देशप्रेम, धर्मप्रेम, आणि अन्यायांविरूद्ध चिडून उठण्याची शक्ती दिली. विद्यार्थ्यांना निर्भय बनविले. दयानंद कॉलेज म्हणजे क्रांतीसाठी जीवंत शस्त्रे पुरविणारे एक कोठारच होते.

लहानमोठ्या गावात आर्य समाज संघटना स्थापन झाल्यामुळे दीनदार सिद्दीक संघटनेचा प्रभाव कमी होऊ लागला. मुरूम (ता. उमरगा) आर्य समाजाची स्थापना झाली. तेंव्हा निझामने तेथे दोनशे फौजी जवानांची एक तुकडी ठेवली. लष्कराच्या मदतीने दीनदार सिद्दीक पार्टी आणि खाकसार पार्टी कार्य करू लागली. आष्टा (कासार) येथे सिद्दीकीच्या भाषणाने लोक चिडून उठले. कारण भाषणापूर्वी सिद्दीक संघटनेने मशिदीत गाय आणली होती. शामलालजीना ही बातमी कळताच ते आष्टा (कासार) येथे आले. त्यांनी आष्टा (का.), मुरूम वगैरे खेड्यात भाषणे देऊन हिंदूंना आर्य समाजाची दीक्षा दिली व यज्ञोपवीत घातले. आर्य समाजाची चळवळ हैदराबाद स्टेटच्या सरहद्दीपर्यंत पोचल्याचे पाहून निझामाने मुरूमला ठेवलेल्या मिलीटरीचा खर्च हिंदूवर बसवला. त्यामुळे असंतोष अधिकच वाढला. सर अकबर हैदरी त्यावेळचे निझामचे प्रधान होते. अनंतराव काका (आष्टा का.) राम पांढरे व करबसप्पा ब्याळे (मुरूम) हे हैदराबादला जाऊन हैदरीसाहेबास भेटून आले. हा सर्व खर्च हिंदू रयतेवर लादणे अन्यायकारक आहे असे निवेदन देऊन आग्रह धरला. तेव्हा हैदरीसाहेबांनी हिंदूबरोबर मुसलमान रयतेवरही समान खर्च बसवला. पण रयतेने मिलीटरीचा खर्च देणे ही शुद्ध अन्यायकारक बाब कायमच राहिली !

सोलापूराहून प्रकाशित होणारे 'वैदिक संदेश' व 'सुदर्शन' या आर्य समाजाच्या मुखपत्राद्वारे लढ्याची माहिती पुढील सूचना वगैरे लोकापर्यंत पोहचू लागल्या. 'वैदिक संदेश' ने तर 'निझाम सरकार के काले कानून' हे पुस्तक प्रसिद्ध केले. हैदराबाद स्टेटमधील उस्मानाबाद जिल्ह्यात ज्यांच्यावर भाषणबंदी व लेखनबंदीचा हुकूम जारी केला आहे, अशा तेरा लोकांची नांवे प्रसिद्ध करण्यात आली. त्यात राम पांढरे (मुरूम) यांचे नांव समाविष्ट होते. 'नागवार बागी' म्हणून या तेरा व्यक्तींना निझाम सरकारने नोटीसा दिल्या होत्या.

हुतात्मा रामा मांग –

तावशी ता. लोहारा (पायगा) येथे रामा मांग या नावाच्या गृहस्थाने आर्य समाजाची दीक्षा घेतली होती. इ.स.१९३२ मध्ये तावशीला हिंदू देवालय पाडून मशीद बांधण्याचा उद्योग सुरू केला. तेव्हा पेटलेल्या आर्यसमाजी लोकांनी मशीदीचा ओटा पाडून टाकला. तावशीच्या रझाकारांनी भोवतालच्या गावी जाऊन दोन ट्रक भरून सशस्त्र पठाण व अरबांना बोलावून आणले 'आता आम्हास विरोध करण्याची कोणात हिंमत

आहे ?' अशा आरोळ्या ठोकीत देवालय पांडण्यास निघाले ! सशस्त्र पठाण व अरब उभे असल्याचे पाहून सर्व हिंदू निमूटपणे उभे राहीले ! पण एवढ्यात 'मी बहाद्दर तुमच्याशी मुकाबला द्यायला तयार हाय ! देवळाच्या दगडाला हात लावाल तर एकेकाची मुडदे पाडीन!' अशी गर्जना ऐकू आली. तो होता रामा मांग ! एकटाच पण बळकट देहाचा रामा पुढे येताच दुरून एका पठाणाने त्याच्यावर गोळी झाडली. ती त्याच्या मांडीत घुसली ! तशा अवस्थेत रामा मांग हा पठाण व अरबांच्या घोळक्यात तुटून पडला ! पहिल्या झटक्यातच त्याने चार पठाण व एका अरबास लोळविले ! एका पठाणाच्या हातातील बंदूक घेऊन बंदुकीच्या तुंब्याने चार-पाच पठाण व अरबांची टाळकी फोडली ! एका पठाणाच्या हातातील तमंचा हिसकावून घेतला. रामाचा अवतार बघताच पठाण व अरबांनी पळ काढला. लोकांनी रामा मांगास तुळजापूरच्या दवाखान्यात नेले व तेथून उस्मानाबादला नेले. कारण मांडीत घुसलेल्या गोळीमुळे रक्तस्त्राव होऊन तो बेशुद्ध झाला होता. शेवटी तो उस्मानाबादच्या दवाखान्यात मरण पावला.

आर्य समाजाच्या एका शाखेचे अध्यक्ष माणिकराव यांच्यावर गुंडानी हल्ला करून त्यांना जखमी केले. दि. २७ आक्टोबर १९३८ ला त्यांचे दवाखान्यात निधन झाले. पोलीसांनी त्यांचे प्रेत त्यांच्या नातेवाईकांच्या ताब्यात देण्यात नकार दिला . तेव्हा आर्य समाजी तरूणांनी निषेधार्थ मिरवणूक काढली. पोलिसांनी पं. देविलाल व इतर २० आर्य समाजी कार्यकर्त्यांना अटक करून नेले.

असा निझामचा आर्य समाजी लोकावर फारच राग होता. हिंदूंचे संघटन करणाऱ्या आर्य समाजाच्या चळवळीस चिरडून टाकण्यासाठी त्याने अनेक मार्गाचा अवलंब केला. त्याची प्रतिक्रिया आर्य समाजाच्या शाखा द्विगुणित होण्यात दिसून येऊ लागली. आर्य समाजाने केवळ हिंदूचे संघटन केले एवढेच नाही तर बळजबरीने बाटवलेल्या हिंदूंना तसेच जन्मजात मुसलमानांनाही वैदिक पद्धतीने दीक्षा देऊन शुद्धिकरण करण्याचे कार्य द्रुतगतीने चालू ठेवले. अनेक अस्पृश्यांना आर्य समाजात घेऊन त्यांच्यापुढे हिंदू धर्माचा, हिंदू राष्ट्राचा अभिमान जिवंतपणे उभा केला. हे आर्य समाजाचे कार्य फार मोठे आणि मोलाचे आहे. आर्य समाज संघटना होती म्हणून हैदराबाद स्टेट काँग्रेसला पाय रोवून उभे ठाकता आले !

(साभार- 'हैदराबाद स्वातत्र्य संग्राम' या ग्रन्थातील एक महत्वपूर्ण प्रकरण)

सत्कार करू अतिथींचे...निर्माण करू राष्ट्राचे !

– राजवीर शास्त्री

'अतिथी देवा भव ।'

तैतिरीयोपनिषदकार म्हणतात – 'अतिथीला आपला देव माना, त्यांची सेवा करा. पण अतिथीला देव का मानावं ! त्यांची सेवा का म्हणून करावी ? हा अनेकांच्या अंतर्मनातला प्रश्न आहे. त्याबाबत थोडी चर्चा करू !

अतिथी कोणास म्हणावे ?

ज्याच्या येण्याची, थांबण्याची व जाण्याची तिथी निश्चित नसते, अशा अकस्मात घरी आलेल्या व्यक्तीला **अतिथी** असे म्हटले जाते. तसेच जनकल्याणार्थ जे धर्मोपदेश करीत सर्वत्र सतत फिरत असतात, अशा परमयोगी संन्यास्यांनाही अतिथी म्हटले जाते. आपण अतिथी म्हणजे घरी आलेला नातेवाईक (पाहुणा) एवढाच अर्थ घेतो. खरे तर अतिथी शब्दाची व्यापकता फार मोठी आहे. जे विद्वान आहेत, वैदिक धर्माशी व वैदिक सिद्धातांविषयी प्रामाणिक आहेत, तत्वनिष्ठ व ईश्वरनिष्ठ आहेत, देशभक्त आहेत, वैदिक संस्कृतीचे रक्षक आहेत अशा सज्जन व्यक्ती, योगी व संन्यासी व्यक्तीच अतिथी म्हणवून घेण्याचे अधिकारी आहेत. जे देश धर्म व संस्कृती रक्षणार्थ समर्पित व्यक्ती आहेत, विद्वान, धर्मात्मा व चारित्र्यवान, शांत, सुस्वभावी व सुकर्मी व्यक्ती मग ती कोणत्याही वर्ण

महर्षी दयानंदांनी 'सत्यार्थ प्रकाश' या ग्रंथामध्ये आई, वडील, सद्गुरू, अतिथी व पती–पत्नी हे पाच जीवंत देव असून त्यांचा आदर सत्कार करणे ही वेदोक्त पूजा आहे, असे म्हंटले असून याच संदर्भात ते पुढे लिहितात– 'याच देहधारी देवांच्या संगाने मनुष्य देहाची उत्पत्ती, पालन, सत्यशिक्षण, विद्या व सत्योपदेश यांची प्राप्ती होते. या परमेश्वरप्राप्तीच्या पायऱ्याच आहेत. या देवांचीसेवा न करता जे लोक पाषांणादीकांच्या मूर्तींची पूजा करतात, ते अत्यंत वेदविरोधी आहेत.

या जीवंत व मूर्तिमंत व देवांची पूजा करणे म्हणजे त्यांच्या हृदयानुकूल वर्तन करणे, मनःपूर्वक त्यांची सेवाशुश्रूषा करणे, आपल्या सदाचरणाने व सदव्यवहाराने त्यांना सदैव प्रसन्न ठेवणे हे होय. या अशा वर्तनाने आपण त्यांच्या प्रेमाचे व आशीर्वादाचे पात्र बनतो आणि यामुळे आपल्या आयुष्य, विद्या, यश व बलामध्ये वृद्धी व्हायला लागते. संत म्हणतात –

बहुधा जन्माअंती जन्मलासी तू नरा ।
देव तू सोयरा करी आता ।।

जो आपल्याला सुख देतो, तो देव ! तसेच जो सुख देतो, तो सोयरा! तेव्हा आपल्याला सुखी व्हायचे असेल, तर देवांशी सोयरसंबध जुळविणे गरजेचे आहे,

व आश्रमाची असो, त्यांना 'अतिथी' या वर्गात सामावून घेतले जाऊ शकते. जे लोक साधू, संत, योगी व संन्याशाच्या वेशात ढोंग-पाखंड पसरवितात, त्यांच्यापासून सावध राहण्याचा इशारा ही शास्त्रकारांनी दिलेली आहे.

अतिथी यज्ञाचे स्वरूप -

अतिथीचे आगमन होताच त्यांना हसत मुखाने अभिवादन करावे. पाद्य, अर्घ्य व आचमन यासाठी तीन प्रकारचे पाणी द्यावे. बसण्यास आसन द्यावे. मग आदरपूर्वक त्यांची विचारपूस करून त्यांच्या आवश्यकतेनुसार व आवडीनुसार त्यांना उत्तम पेय व अन्न देऊन त्यांना तृप्त करावे. त्यानंतर त्यांच्या समोर बसून त्यांचेशी ज्ञान-विज्ञान विषयक चर्चा करावी किंवा ज्याने धर्म, अर्थ, काम व मोक्षाची प्राप्ती होईल, असा उपदेश श्रवण करावा आणि त्यांच्या उपदेशानुसार आपल्या आचरणात बदल करावा. ज्यावेळी अतिथी आपल्या घरातून दुसरीकडे जाण्यासाठी निघाले की त्यांचे बरोबर आपणही कांही अंतरापर्यंत चालत जावे. असे या अतिथी पूजनाचे स्वरूप आहे. अतिथी पूजन म्हणजे ध्येयाचे जागरण ! अतिथी पूजन म्हणजे दैवी संपदांचे संवर्धन! अतिथी पूजन म्हणजे यज्ञ संस्कृतीचे रक्षण!

त्यानंतर शिष्टाचाराचा भाग असा की अतिथीला प्रथम भोजन द्यावे व नंतर घरातील लोकांनी जेवन करावे असे शास्त्र सांगतो. जे लोक याउलट वर्तन करतात, ते अन्न काय खातात ? ते तर जणू आपल्या परिवाराच्या यश व कीर्तीलाच खाऊन टाकतात. असेही म्हटले आहे. दुसरे असे की आपल्यासाठी स्वयंपाक घरात जे बनविले गेले आहे. त्यातलेच अतिथीस द्यावे. त्यांना वेगळे व आपल्याला वेगळे बनवू नये. अर्थात आपण चांगले खाणे व अतिथीला शिळेपाके देणे हा प्रकार तर अनुचितच आहे. असे करायलाच नको. दुसरा प्रकार असा की आपण आपल्या ऐपतीपेक्षा जास्त खर्चाचेही असून नये. आपल्या कामधंद्याकडे दुर्लक्ष होईल इतका वेळही जाऊ नये. कारण आपणांस अतिथी यज्ञ दररोज करावयाचा आहे. याचे भान ठेवणे गरजेचे आहे. नाही तर मग घरातील महिला वर्गाची कुरबुर सुरू होईल. तुमच्या त्या अतिसेवेमुळे अतिथींची वर्दळ वाढेल. खिशाला झळ लागेल आणि मग एक दिवस 'नको रे बाबा, अतिथी यज्ञ!' असे म्हणून कायमचे पाठ फिरवाल म्हणून तारतम्य ठेवणे गरजेचे आहे. तिसरी गोष्ट म्हणजे अतिथीनांही सतत फिरत राहायचे असते . अशा स्थितीत ते ज्या घरी थांबले त्या प्रत्येकांनी त्यांना भारीच जेवण दिले, तर त्यांचीही प्रकृती बिघडेल. त्यामुळे सात्विक व सुपाच्य जेवण देणे दोघांच्याही हिताचे आहे. चौथी गोष्ट म्हणजे अतिथी

येण्याआधीच स्वयंपाक बनला असेल, तर त्यातलेच त्यांना देण्याने घरच्यासाठीं थोडे कमी पडेल. सर्वांना थोडं कमी खावे लागेल. त्यामुळे कमी खा ! निरोगी रहा ! या आयुर्वेदाच्या आदेशाचे अनायास पालन होईल आणि वैदिक उपवासही घडेल व आरोग्य आणि आयुष्य वाढण्यास मदत होईल. पुढचा संकेत अथर्ववेदाचा असा आहे की, अतिथीने द्वेषपूर्वक अन्न सेवन करून नये किंवा जे द्वेषपूर्वक भोजन देतात, त्यांचे अन्न स्वीकारू नये किंवा अतिथीला अन्नदात्याविषयी 'या यजमानाने आपले धन धर्ममार्गाने मिळविलेले आहे की अधर्माने ?' अशा प्रकारची शंका असेल, तर तेथील अन्न सेवन करू नये किंवा अतिथी विषयी अन्नदात्याच्या मनात संदेह असेल, तर तेही अन्न ग्रहण करू नये.

अतिथी ज्या घरचे अन्न भक्षण करतो, त्या घरातील माणसे निष्पाप होतात, असे ही म्हटले गेले आहे. तेंव्हा अतिथी यज्ञ करणे हे इहलौकिक व पारलौकिक सुख संपादनासाठी अत्यंत गरजेचे आहे.

जे लोक अतिथी समजून धूर्त ढोंगी व पाखंडी लोकांच्या नादी लागतात, ते अधिकच दुःखाच्या खाईत जातात आणि जे लोक नास्तिक व अज्ञानी आहेत, ते योग्य अतिथीची अवहेलना करतात. घरी आलेल्या अतिथींना पाणीही विचारीत नाहीत, त्यांची काय गती होत असेल ? या प्रश्नाचे उत्तर कठोपनिषद या ग्रंथात सापडते. उपनिषदकार म्हणतात – 'ज्यांच्या घरातून अतिथी अन्नपाण्याविना उपाशी जातो, त्या मंदबुद्धी व्यक्तीच्या आठ मौलिक गोष्टी नाश पावतात.' त्या कोणत्या आहेत ते पाहू –

आशाप्रतीक्षे संगतं सुनृतां च
इष्टापूर्ते पुत्रपशूंश्च सर्वान् ।
एतद् वृंक्ते पुरूषस्याल्पमेधसो
यस्यानश्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे ।।

ज्या आठ गोष्टी अतिथीयज्ञ न करण्याने नष्ट होतात, त्याच आठ गोष्टी अतिथी यज्ञ करणाऱ्यांना प्राप्त होतात. कसे ते पाहू –

१) आशा –

आशा अर्थात इच्छा, अभिलाषा किंवा अपेक्षा ! आशा ही प्रत्येकाच्या ठायी असते. ही एक प्रकारची संजीवनी शक्ती आहे. आशेच्या बळावरच माणूस जगतो. आशा संपली की जगण्यात रस राहत नाही. माणूस चांगली व वाईट काम करतो, त्यामागे आशाच दडलेली असते. 'खा...प्या आणि मौज करा. जीवन एवढेच आहे. पूर्वजन्म पुनर्जन्म व परलोक या सर्व गोष्टी फसव्या आहेत,' या धारणेने ग्रस्त असलेली माणसे शारीरिक सुखालाच अंतिम सुख समजून त्या सुखाच्या अपेक्षेने इंद्रियांच्या विषय भोगांमध्ये रममाण होतात. त्यांच्या पूर्ततेसाठी पैसा गरजेचा असतो.पैशाने भोगसामग्री विकत

घेता येते. यासाठी तो पैशाच्या मागे लागतो. त्याच्या प्राप्तीसाठी प्रसंगी, अधर्म, अन्याय व अनैतिकतेचाही अवलंब करतो. पैसा मिळवितो, शरीराचे चोचले पुरवितो, इंद्रियसुखासाठी लागणारी साधनसामग्री ही उपलब्ध करतो. असे करण्यातच हयात संपते. पण या गोष्टीचा हव्यास संपत नाही. खरे सुख व खरा सुखदाता हे दोन्ही बाजूलाच राहतात. त्यामुळे भौतिक सुखसामग्री कितीही मुबलक असली, तरी त्याने तृप्ती होत नाही. तो अतृप्त राहतो. निराशेच्या गर्तेत जातो.

याउलट ज्यांची आशा नश्वराकडून ईश्वराकडे आशान्वित होते. ते श्रद्धापूर्वक व दृढतापूर्वक धर्माचरणावर आरूढ होतात. अष्टांगयोगाचा मार्ग प्रशस्त करतात. अभ्युदय आणि निःश्रेयस् या दोन्हींच्या समन्वयाने त्यांचे जीवन पुष्ट, सुगंधित व परिपक्व होते. मानव जीवन सार्थकी लागते, अशी आशा खऱ्या अर्थाने अमृत बनते. नश्वराच्या मागे लागले की आशा मृतवत् होते. चुकीच्या दिशेने धावणाऱ्या आशेला योग्य मार्गाकडे वळविण्याचे कसब अतिथीकडे असते. त्यासाठी अतिथी पूजन गरजेचे आहे.

(उर्वरित भाग पुढील अंकात)

– आर्य समाज, सोलापुर

मो. ९८२२९९००११

वर्षाऋतूतील आरोग्य

– वैद्य विज्ञानमुनी

ग्रीष्म ऋतुतील (उन्हाळ्यातील) तेजस्वी सूर्य किरणांमुळे पृथ्वीवरील उष्णता वाढते. त्यामुळे पिण्यासाठी पाणी मोठ्या प्रमाणावर लागते. सर्व प्राणी विशेषत: मानव हे खूप पाणी पितात. त्यामुळे पोटाची पाचनक्रिया मंदावते. मंदावलेली पाचनक्रिया वर्षाऋतुमध्ये त्रासदायक ठरते. पावसाळ्यात सूर्यप्रकाशही कमी असतो. त्यामुळे देखील पाचनक्रिया मंदावण्याची शक्यता असते. या ऋतुमध्ये वात, पित्त व कफ या त्रिदोषांचाही प्रकोप होतो. शरीरामध्ये रोग होऊ नये म्हणून आपल्या प्राचीन ऋषीमुनींनी व आचार्यांनी सण व उत्सवामध्ये कशा प्रकारचा आहार घेतल्याने पाचनक्रिया वाढेल व प्रकृती कशी चांगली राहील ? याची दक्षता घेऊनच अन्नपदार्थ सेवन करण्याचे आवाहन केले. नागपंचमी या सणादिवशी भोजनात कानवले व कडेबोळे यांचा समावेश असतो. या पदार्थांत पाचक पदार्थ असतात. ओवा, आद्रक, सुंठ, जीरे, मीरे, लाल तिखट, हळद, सेंधव, पादेलवण इत्यादी घालून वरील पदार्थ तयार करतात. त्यामुळे पाचनक्षमता अधिक तीव्र होते.

मंदावलेली पाचनक्रिया जर नाही वाढली, तर आपल्या शरीरामध्ये अनेक रोगांचा प्रादुर्भाव होण्याची शक्यता असते.

अशा वेळी वर्षाऋतुमध्ये संग्रहणी, हगवण, सर्दी, पडसे, खोकला, ताप, चर्मरोग, गुल्म(वायुगोळा) आदी रोग होण्याची दाट शक्यता असते. या ऋतुंच्या प्रारंभी म्हणजेच मृग नक्षत्राच्या पहिल्या दिवशी हिंग ३ मासे व गुळ ३ मासे मिसळून खातात. त्यामुळे पोटातील जंतू (जंत) मरतात व पाचनक्रिया वाढण्यास मदत होते. चरकाचार्य म्हणतात-

वर्षासु वासिकातिलाश्चैव
प्राय: प्रादुर्भवन्ति (च.चि.३०/३००)

लक्षात ठेवण्यायोग्य बाबी-

१)या ऋतुमध्ये दुपारी झोपू नये. यामुळे आजारपण येण्याची शक्यता असते व भूक मंदावते.

२)वर्षाऋतुत पावसात पुन्हा-पुन्हा भिजल्याने सर्दी-खोकला-पडसे-ताप आदी रोग होतात.

३)या काळात नदीचे, ओढ्याचे व एके ठिकाणी साठलेले पाणी पिऊ नये.

४)या ऋतुत दही, ताक, आंबट पदार्थ व तळलेले पदार्थ वर्ज्य करावेत.

५)एखादी जखम झाल्यास ती लवकर दुरुस्त होण्यासाठी संजीवनी (जखमजोडी) रस लावावा.

६)या काळात शौचाद्वारे आव-आम-शेम पडत असते, म्हणून अति तिखट, गोड व तळीव पदार्थ यांचे अत्यधिक सेवन करु नये.

७) हितभुक, मितभुक व ऋतभुक या पद्धतीने जीवन जगावे.

८) भोजनात सात्विक, ताजे, पचन्यास हलके असे अन्न खावे. ज्वारीची भाकर, कण्या(दलिया),घुगऱ्या, भाज्या, फळे, दुध व साखर न घातलेला फळांचा रस यांचे सेवन अवश्य करावे.

९)या ऋतुदरम्यान विरुद्ध आहार घेऊ नये. उदा.दूध किंवा दुग्धजन्य पदार्थांसोबत तिखट, आंबट, खारट, तुरट, कडु पदार्थ, मांस, अंडे व तळलेले पदार्थ व भाज्या, व्यंजने(मसाले)खाऊ नयेत.

१०)अश्वगंधा, हिरडा, आद्रक, ओवा, त्रिफळा इत्यादी शक्तिवर्धक व सहज पचणाऱ्या अन्न व औषधींचे सेवन करावे.

११)सकाळी व संध्याकाळी भ्रमण करावे. हलका व्यायाम करावा व नेहमी पाणी शोधून(गाळून) प्यावे.

औषधोपचार :- या ऋतुमध्ये सकाळी ३ मासे हिरडा चूर्ण व ३ मासे सेंधव(मीठ) मिसळून खावे व त्यावर पाणी प्यावे. मलावरोध टाळण्यासाठी त्रिफळा, गंधर्व हारितकी, पंचसकार हे चूर्ण व सारक पदार्थ आदी भक्षण करावे.

पाचनक्रिया वाढवण्यासाठी लवणभास्कर चूर्ण, हिंग्वाष्टक चूर्ण, अभयारिष्ट या औषधींचे सेवन करावे. उदरामृत गोळ्या घ्याव्यात. वात रोग टाळण्यासाठी महारास्नादि काढा, गुगळ, तसेच पित्त टाळण्यासाठी अविपत्तिकर चुर्ण, सुतशेखर, कामदुग्धा

शिबिर वार्ता

औराद (गुं.) 'शिबिरांमुळ राष्ट्राचे संवर्धन' -रमेश जाधव

मुले हीच खरी राष्ट्रीय संपत्ती असून संस्कार शिबिरांच्याच माध्यमानेच या राष्ट्रीय संपत्तीचे संरक्षण व संवर्धन होऊ शकते, असे विचार राज्यपरिवहन मंडळाचे निवृत्त विभागीय अधीक्षक श्री रमेश जाधव यांनी व्यक्त केले. प्रांतीय सभेच्या सहकार्याने औराद (गुंजोटी) येथील आर्य समाजाच्या वतीने दि. २७ एप्रिल ते ३ मे २०१५ या दरम्यान आयोजित निवासी मानवता संस्कार शिबिराच्या समापन समारंभात श्री जाधव अध्यक्ष स्थानावरून बोलत होते. यावेळी आर्यवीरदल प्रशिक्षक श्री राजेश आर्य, डॉ.नयनकुमार आचार्य, तानाजी शास्त्री, अॅड.मारूतीराव घोरपडे गुरूजी, विज्ञानमुनिजी, रघुरामजी गायकवाड, प्रधान बाबुराव सूर्यवंशी, मंत्री राजेंद्र पाटील आदी उपस्थित होते. यावेळी विशाल पाटील, संकेत सनातन, यशवर्धन सूर्यवंशी, स्वप्नील मयाचारी, जवळगे आदी शिविरार्थ्यांनी आपले शिबिरकालीन अनुभव कथन केले. शिबिर दरम्यान विविध उपक्रमात उत्कृष्ट कामगिरी बजावणाऱ्या विद्यार्थ्यांना यावेळी पारितोषिके प्रदान करण्यात आली. श्री रघुरामजी गायकवाड यांनी दानदात्यांचा गौरवोल्लेख केला.

कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक व सूत्रसंचालन श्रीधर मयाचारी यांनी केले तर राजेंद्र पाटील यांनी आभार मानले.

परभणी 'आमचा परिसर सुसंस्कारित झाला' - के. पी. कनके

परभणीच्या आर्य समाजामुळे आमच्या ज्ञानगंगा गुरूकुल वसतिगृहात संस्कार शिबिर दुसऱ्यांदा आयोजित करण्याचे भाग्य आम्हास लाभले व आमचा परिसर संस्कारित झाला. त्याबद्दल आम्ही ऋणी आहोत असे उद्‌भार सामाजिक कार्यकर्ते व ज्ञानगंगा गुरूकुलचे प्रमुख श्री के.पी.कनके यांनी काढले.

सात दिवसीय निवासी मानवता संस्कार शिबिराचा समारोप दि. ३ मे रोजी झाला. त्यावेळी अध्यक्षस्थानावरून श्री कनके बोलत होते. यावेळी प्रमुख पाहुणे सर्वश्री हरिसिंह आर्य, लक्ष्मणराव आर्य, डॉ. वीरेंद्र शास्त्री, पं. सुधाकर शास्त्री, व्यंकटेश हालिंगे, सभेचे उपमंत्री लखमसीभाई वेलानी, तातेराव आर्य आदि उपस्थित होते. इतर मान्यवरांनीही आपले विचार मांडले. यावेळी शिबिरार्थ्यांनी पारितोषिकांच वितरण करण्यात आले. प्रास्ताविक प्रा.डॉ. प्रकाश कदम यांनी तर सूत्रसंचलन दिगंबर देवकते यांनी केले.

शिबिराच्या सफलतेसाठी

पदाधिकारी सर्वश्री विजयकुमार अग्रवाल, डॉ. धनंजय औंढेकर, बालकिशनजी बिर्ला, सौ. लीलावती राजेंद्र जगदाळे, बाबुराव आर्य, प्रा. मधुकर पांचाळ, विजय गावंडे, मूलचंद शर्मा, रणजित गायकवाड, विश्वजीत आर्य, रोहित जगदाळे आदींनी प्रयत्न केले.

औराद शहा. 'ईश्वरीय मूल्य आत्मसात करा' – हरिसिंहजी

सध्या संपूर्ण समाजव्यवस्था उध्वस्त होत असतांना प्रांतीय सभा व आर्य समाजांनी सुरू केलेले 'संस्कार शिबिरांचे' व्यापक उपक्रम परमेश्वरीय मूल्यांना पुनःस्थापित करीत आहेत. तेंव्हा विद्यार्थ्यांना या मूल्यांना जीवनात आत्मसात करावे, असे आवाहन आचार्य श्री हरिसिंहजी आर्य (दिल्ली) यांनी केले.

औराद (शहा.) येथील संस्कार शिबिरा (४ ते १० मे) च्या समारोप कार्यक्रमात ते बोलत होते. अध्यक्षस्थानी ज्येष्ठ स्वा.सै.श्री हिरामनजी डोईजोडे अण्णा हे होते. तर प्रमुख पाहुणे म्हणून सर्वश्री डॉ. अंगदराव कदम, प्रा. महेंद्र गिरी, प्रा. दत्ता सोमवंशी, हरिश्चंद्र सुडे आदी उपस्थित होते. अनिकेत गरड, अभिषेक जाधव, संकेत कारभारी, राहुल वाडीकर, प्रदीप वासरे, अश्विन गरड, विरूपाक्ष माळी, लक्ष्मण कुंभार, आशीष बिरादार या यशवंतांना पुरस्कार प्रदान करण्यात आले.

कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन व प्रास्ताविक डॉ. प्रकाश कच्छवा यांनी केले. तर आभार मंत्री भरत बियाणी यांनी मानले.

हदगांव 'सुसंस्कारित मुलगी हिच युगनिर्मात्री' – देशमुख

बिगडत चाललेल्या सामाजिक व सांस्कृतिक परिस्थितीत सुधार घडवून आणावयाचा असेल तर, मुलींच्या सर्वांगिण विकासाकडे लक्ष देणे गरजेचे आहे. कारण सुसंस्कारित मुलगी हिच खऱ्या अर्थाने युगनिर्मात्री आहे, असे विचार हदगांव आर्य समाजचे मंत्री श्री प्रभाकरराव देशमुख यांनी व्यक्त केले. आर्यसमाजात चाललेल्या अनिवासी कन्या संस्कार शिबिराच्या समारोप दिनी (दि. १० मे) श्री देशमुख बोलत होते. अध्यक्षस्थानी हदगांवभूषण श्री बद्रीनारायणजी आर्य (तोष्णीवाल) हे होते. तर प्रमुख पाहुणे म्हणून सर्वश्री राजेश आर्य, डॉ. नयनकुमार आचार्य, आर्यमुनिजी, श्रीमती कमलाबाई झंवर आदी उपस्थित होते. यावेळी पल्लवी सूर्यवंशी, रोशनी जोशी, साक्षी निळे, राजनंदिनी सुर्यवंशी, गुड्डी चंद्रवंशी, पवनी कुरेल्लू, श्रद्धा कदम या शिबिरार्थिनींनी व पालकप्रतिनिधी ॲड. सौ. गोरे यांनी विचार मांडले.

शिवनखेड 'मानवतेचे उपासक बना' –प्रा. सोमवंशी

वर्तमान परिस्थितीत माणूस आपल्या नैतिक विकासापासून दुरावत चालला आहे. विद्यार्थ्यांना सर्वांगिण विकासाचे मार्गदर्शन देखील मिळत नाही. अशा वातावरणात मानवता संस्कार शिबिर विद्यार्थ्यांना खऱ्या अर्थाने जगण्याचा आदर्श शिकवितात. याद्वारे विद्यार्थ्यांनी मानवतेचे उपासक बनावे, असे आवाहन प्रांतीय सभेचे संस्कार शिबिर प्रमुख प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी यांनी शिवनखेड येथील संस्कार शिबिरात केले. कार्यक्रमाचे अध्यक्षस्थानी ज्येष्ठ आर्यसमाजी श्री व्यंकटराव कुल्ले हे होते. तर मंचावर सर्वश्री आचार्य हरिसिंहजी, राजेश आर्य, पं.प्रतापसिंह चौहान, पं. वैजनाथराव करकेले, अशोक कातपुरे आदी उपस्थित होते. यावेळी शिबिरातील विद्यार्थ्यांना प्रमाणपत्र व ग्रंथाचे वितरण करण्यात आले. हे शिबिर यशस्वी करण्यासाठी सर्व पदाधिकाऱ्यांनी कठोर परिश्रम घेतले.

लातूर 'मन, मनगट व मस्तिष्काचा विकास' –मा.आ.कव्हेकर

आर्य समाजातर्फे राबविल्या जाणाऱ्या मानवता संस्कार शिबिरांद्वारे विद्यार्थ्यांच्या मन, मनगट व मस्तिष्काचा विकास साधला जातो. मुलांची सर्वांगिण प्रगती होते व अशा सुसंस्कारांतून देशात पुन्हा एकदा राजा शिवाजी उदयास येऊ शकेल. असा आत्मविश्वास माजी आमदार श्री शिवाजीराव पाटील कव्हेकर यांनी व्यक्त केला. सभेच्या सौजन्याने रामनगर-लातूरच्या वतीने आयोजित संस्कार शिबिराच्या समारोप समारंभात ते अध्यक्षस्थानावरून बोलत होते. प्रमुख पाहुणे म्हणून ज्येष्ठ पत्रकार श्री जयप्रकाश दगडे, आचार्य हरिसिंहजी, राजेश आर्य, शिविर संयोजक प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी आदि उपस्थित होते. या मान्यवरांनी ही यावेळी आपले विचार मांडले. श्री दगडे यांनी शिविर उपक्रमाने आदर्श मानव समाज घडतो. 'सध्या माणुसकी लोपत चालल्याने धुरावत चाललेल्या माणसी-माणसांत पूल' बांधण्याचे काम आर्य समाजाने करावे, असे आवाहन त्यांनी केले. याप्रसंगी शिबिरात विविध विभागात यशस्वी कामगिरी बजावणाऱ्या विष्णू मोटे, अभिषेक जाधव, ऋचेश यादव, राहुल अक्षय, चेतन बस्तापुरे, नागेश बस्तापुरे, मधुप यादव, अक्षय रोंगे, पीयूष आर्य, वैभव गुंडरे, सिद्धांत, गस्तावार, सुयोग्य देशमुख आदी विद्यार्थ्यांना पारितोषिके प्रदान करण्यात आली. कांही शिबिरार्थी व पालकांनी देखील आपले मनोगत व्यक्त केले. कार्यक्रमप्रसंगी शिबिरात सढळ हातांनी

मदत करण्याचा दानदात्यांचा सत्कार करण्यात आला. प्रास्ताविक प्रधान श्री शंकरराव मोरे यांनी तर संचालन श्री ज्ञानकुमार आर्य यांनी केले तर आभार सभेचे उपप्रधान श्री राजेंद्र दिवे यांनी मानले. शिविरात सर्वश्री पं. राजवीरजी शास्त्री, पं. सुधाकरजी शास्त्री, पं. प्रतापसिंह चौहान, पं. वैजनाथअप्पा करकेले यांनी बौद्धीक तर आचार्य हरिसिंहजी राजेश आर्य, व्यंकटेश हालिंगे, अशोक पावले, प्रल्हाद तुपे, प्रशांत जमघाडे, संतोष पवार, मारूतीराव घोरपडे, तातेराव काटेकर, विश्वजीत आर्य आदींनी शारीरिक व्यायामाचे पूर्ण वेळ प्रशिखण दिले. शिबिर समारोप प्रसंगी रेणापुर व लातूरातील रामनगर, स्वा.सै. कॉलनी व गांधी चौक या आर्य समाजांचे पदाधिकारी उपस्थित होते.

शेंबाळपिंपरी ‘संस्कारशिबिरे काळाची गरज’–श्री देशमुख

सुयोग्य व चारित्र्यसंपन्न पीढी घडविण्याचे कार्य आर्य समाजाच्या ध्येयधोरणामुळे व त्यांनी आयोजित केलेल्या संस्कार शिबिरामुळेच होऊ शकेल. त्याकरिता अशी शिबिरे मोठ्या प्रमाणात घेणे ही काळाची गरज आहे, असे प्रतिपादन हदगाव-पुसद परिसरातील सामाजिक कार्यकर्ते श्री अवधुतराव देशमुख यांनी केले.

प्रांतीय सभेच्या वतीने शिऊर येथील आर्य कार्यकर्ते प्रदीपराव देशमुख व हेमंत देशमुख यांच्या पूर्ण सहकार्याने शेंबाळेश्वर मंदिर संस्थान, शेंबाळपिंपरी येथे मानवता संस्कार व आर्यवीर दल शिबिर (दि. २५ ते ३१ मे २०१५) रोजी घेण्यात आले. शिबिराच्या समारोप कार्यक्रमात श्री देशमुख बोलत होते. प्रमुख पाहुणे म्हणून सर्वश्री आचार्य हरिसिंहजी, राजेश आर्य, प्रभाकरराव देशमुख, नंदकिशोर देशमुख, विजय वाकडे, डी.एम. देशमुख, योगिराज भारती आदी उपस्थित होते.

पं. देविदासराव तळणीकर महाराज, श्रीमती कमलाबाई झंवर, प्रदीप देशमुख, प्रभाकरराव देशमुख आदींनी मार्गदर्शन केले. प्रतापसिंह चौहान व पं. सोगाजी घुन्नर यांनी भजन गायिले तर आभार हेमंत देशमुख यांनी मानले.

आर्य समाज मानवत ची कार्यकारिणी

मानवत जि. परभणी येथे नुकतीच आर्य समाजाची स्थापना करण्यात आली. नवे पदाधिकारी खालीलप्रमाणे आहेत–

प्रधान– विजय बालकिशनजी गावंडे

उपप्रधान– विष्णू बालकिशनजी गावंडे

मंत्री– सुरेश रामजीवन बिर्ला

उपमंत्री–हनुमान उद्धवराव काकडे

कोषाध्यक्ष– ज्ञानदेव अशोकराव गावंडे

पुस्तकाध्यक्ष–अशोकराव गावंडे

कार्यकारिणीत ७ सदस्यांचा समावेश आहे.

शोक वार्ता दानदाते श्री बाबुराव सूर्यवंशी कालवश

औराद (गुंजोटी) येथील आर्य समाजाला अत्यंत अल्पकिंमतीत जमीनदान करणारे वरिष्ठ आर्य कार्यकर्ते श्री बाबुराव विश्वनाथराव सूर्यवंशी यांचे दि. १० सप्टेंबर २०१५ रोजी रात्री ९ वा. च्या सुमारास दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ७२ वर्षे वयाचे होते.

श्री सूर्यवंशी यांच्या मागे पत्नी, विवाहित दोन मुले व मुली, नातवंडे असा परिवार आहे. पूज्य स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरूजी) यांचे ते नातलग होत. जुन्या पीढीतील पक्के आर्य समाजी म्हणून त्यांची ओळख होती. आर्य समाजाच्या बांधकामाचा करण्याचा विषय निघाला, तेंव्हा श्री बाबुराव सूर्यवंशी यांनी आपल्या गावालगतच्या शेतजमिनीतून २ गुंठे जमीन अगदी अल्प दरात प्रदान करून मोठे औदार्य दाखविले. समाजातर्फे राबविल्या जाणाऱ्या विविध प्रचार उपक्रमांत ही ते सहभागी होत असत. श्री दिवंगत श्री सूर्यवंशी यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी दु. ११ वा पूर्ण वैदिक पद्धतीने अत्यसंस्कार करण्यात आले.

माधव मुगळे यांचे आकस्मिक निधन

मोगरगा (ता.औसा जि. लातूर) येथील आर्य समाजाचे मंत्री श्री शिवाजीराव निकम यांचे जावई श्री माधव केरनाथ मुगळे यांचे पुणे जिल्ह्यात नुकतेच हृदयविकाराच्या तीव्र झटक्याने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ४८ वर्षे वयाचे होते.

श्री मुगळे यांच्या मागे पत्नी श्यामल व तीन मुली असा परिवार आहे. अंबुलगा (पौळ) ता. निलंगा येथील मूळ निवासी श्री मुगळे हे कुंजीरवाडी ता. हवेली जि. पुणे येथील सर्वांगिण विकास विद्यालय या शिक्षणसंस्थेत चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी (सेवक) म्हणून कार्यरत होते. ६ जुलै रोजी सकाळी शाळेच्या प्रार्थनेच्या वेळी प्रांगणातच हृदयविकाराचा धक्का बसला व जागीच त्यांची प्राणज्योत मालवली. त्यांचे पार्थिव पुण्याहून जन्मगांव अंबुलगा येथे आणण्यात आले व अत्यंत शोकाकुल वातावरणात त्यांच्या वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

यावेळी उपस्थित असलेल्या नातलग, आप्तेष्ट, मित्र व गावकऱ्यांनी साश्रू नयनांनी दिवंगत मुगळे यांना शेवटचा निरोप दिला. दि. १४ जुलै रोजी वेदप्रचारक व प्रसिद्ध याज्ञीक श्री सोममुनिजी व पं. अशोक कातपुरे यांच्या पौरोहित्याखाली शांतियज्ञ संपन्न झाला.

वरील दोन्ही दिवंगतांना प्रांतीय सभेची भावपूर्ण श्रद्धांजली !

वार्ता विशेष — औराद (श.) येथे योगदिन साजरा

औराद शहाजानी (ता. निलंगा) येथील आर्य समाजाच्या सहकार्याने सीमावर्ती ज्येष्ठ नागरिक संघातर्फे दि. २१ जून रोजी 'आंतर्राष्ट्रीय योग दिन' साजरा करण्यात आला. यात योगप्रचारक प्रा. वामन अहंकारी यांनी शिविरार्थ्यांना योगासन प्राणायामाचे प्रशिक्षण दिले. यावेळी त्यांनी शरीर व इंद्रियांच्या पलीकडे जाऊन चेतन आत्मतत्व व महाचेतन परमात्मातत्वाला जाणून घेण्यासाठी सर्वांना अष्टांगयोगाचे अनुष्ठान करण्याचे आवाहन केले. या शिविराज आर्य समाजाचे सक्रिय सदस्य व योगप्रशिक्षक डॉ. प्रकाश कच्छवा यांनी योगासन व प्राणायामाचे सूक्ष्म विवेचन करीत प्रात्यक्षिके करून दाखविली शिविराच्या अध्यस्थानी विरूपाक्षेश्वर स्वामी हे होते.

भालकी येथे कन्या संस्कार शिबिर

कर्नाटक आर्य प्रतिनिधी सभा व आर्य समाज भालकीच्या वतीने येत्या दि. ११ ते १८ ऑक्टोबर २०१५ दरम्यान **आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिबिराचे** आयोजन करण्यात आले आहे. भालकी येथील सत्यनिकेतन विद्यालयात आयोजित या शिबिरात पं. राजवीरजी शास्त्री (सोलापुर), प्रा. सोमवंशी व इतर विद्वानांचे बौद्धिक मार्गदर्शन लाभणार आहे, तर प्रशांत जमदाडे, तातेराव आर्य, सुशीलाबाई आर्य, सीताबाई निरमनाळे, सविता जाधव यांचे योगासन सर्वांगसुंदर व्यायाम, प्राणायाम, ज्युडो कराटे आदींचे प्रशिक्षण लाभणार आहे. तरी मुलींनी शिबिरात सहभागी व्हावे.

- प्रांतीय सभेतर्फे राज्यस्तरीय दोन वक्तृत्व स्पर्धा

पू. पिताश्री स्व.विठ्ठलराव बिराजदार (तांभाळकर) स्मृती

१) राज्यस्तरीय विद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा २०१५

विषय :- 'आधुनिक युगातील क्रांतिसूर्य महर्षि दयानंद'

रविवार, दिनांक २९ नोव्हेंबर २०१५, वेळ :- सकाळी ११.०० वाजता

स्थळः आर्य समाज, परभणी (अग्रवाल मंगल कार्यालय, वसमत रोड)

१) या स्पर्धेत केवळ माध्य.विद्यालयाच्या (इयत्ता ८,९,१० वी वर्गाच्या) विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.
२) या स्पर्धेसाठी प्रत्येक विद्यालय किंवा आर्य समाज जास्तीत जास्त ३ स्पर्धक पाठवू शकतील.
३) प्रत्येक स्पर्धकास मराठी/हिंदी भाषेतून बोलण्यासाठी फक्त ८ (६+२) मिनीटे वेळ दिला जाईल.
४) प्रवेश शुल्क रु. ५०/- भरून दि. २ डिसेंबर २०१५ पर्यंत स्पर्धेची नोंदणी करावी.
५) पारितोषिके - १) रू. १५००, २) रू. ११००, ३) रू. ७७५, रू. १००चे वैदिक साहित्य

सौ कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनंदमुनिजी) यांच्या गौरवार्थ

२) राज्यस्तरीय महाविद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा २०१५

विषय :- 'जागतिक शांततेसाठी म. दयानंदाचे विचार उपयुक्त'

रविवार, दिनांक २२ डिसेंबर २०१५, वेळ :- सकाळी ११.०० वाजता

स्थळः आर्य समाज, परभणी (अग्रवाल मंगल कार्यालय, वसमत रोड)

१) या स्पर्धेत ११ वी ते पदवी वर्गापर्यंत शिकणाऱ्या महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.

२) या स्पर्धेसाठी प्रत्येक महाविद्यालय किंवा आर्य समाज जास्तीत जास्त ३ स्पर्धक पाठवू शकतील.

३) प्रत्येक स्पर्धकास मराठी/हिंदी भाषेतून बोलण्यासाठी फक्त ८ (६+२) मिनीटे वेळ दिला जाईल.

४) प्रवेश शुल्क रु. ५०/- भरून दि. १५ डिसेंबर २०१५ पर्यंत स्पर्धेची नोंदणी करावी.

५) पारितोषिके - १) रू. २०००, २) रू. १५००, ३) रू. १०००, रू. १००चे वैदिक साहित्य

- प्रांतीय सभेतर्फे राज्यस्तरीय दोन निबंध स्पर्धा

सौ. तारादेवी व श्री प्रा.डॉ.जयप्रकाशजी मुंदडा गौरव

१) राज्यस्तरीय विद्यालयीन निबंध स्पर्धा २०१५

विषय :- " एकोनिसाव्या शतकातील सुधारक शिरोमणी स्वामी दयानंद"

- निबंध पाठविण्याची अंतिम तारीख ३१ डिसेबंर २०१५

* या स्पर्धेत केवळ माध्यमिक विद्यालयाच्या (८,९,१० वी) विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.
* स्पर्धकास आपला निबंध २००० शब्दमर्यादिपर्यंत पाठविता येईल. ग्रंथातील मजकूर चालणार नाही.
* निबंधासोबत स्पर्धकांनी मुख्याध्यापकाचे किंवा आर्य समाजाचे पत्र व शाळेचे ओळखपत्र जोडावे.
* परीक्षकांचा निर्णय सर्व स्पर्धकासाठी पूर्णतःबंधनकारक राहील.
* मागील वर्षीच्या विजेत्या स्पर्धकांनासुद्धा या स्पर्धेत भाग घेता येईल.

सौ.डॉ.विमलादेवी व श्री प्रा.डॉ.सु.ब.काळे (ब्रह्ममुनिजी) गौरव

१) राज्यस्तरीय महाविद्यालयीन निबंध स्पर्धा २०१५

विषय :- "हैद्राबाद स्वातंत्र संग्रामात आर्य समाजाचे योगदान"

- निबंध पाठविण्याची अंतिम तारीख ३१ डिसेबंर २०१५-

* या स्पर्धेत कनिष्ठ व वरिष्ठ महाविद्यालय (११ वी ते पदवी व बी.एड) विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.
* स्पर्धकास आपला निबंध ३००० शब्दमर्यादिपर्यंत पाठविता येईल. ग्रंथातील मजकूर चालणार नाही.
* निबंधासोबत स्पर्धकांनी मुख्याध्यापकाचे किंवा आर्य समाजाचे पत्र व शाळेचे ओळखपत्र जोडावे.
* परीक्षकांचा निर्णय सर्व स्पर्धकासाठी पूर्णतःबंधनकारक राहील.
* मागील वर्षीच्या विजेत्या स्पर्धकांनासुद्धा या स्पर्धेत भाग घेता येईल.

- * वरील दोन्हीं स्पर्धांचे निबंध पाठवण्याचा पत्ता *-

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज, परळी-वै. ४३१५१५ जि.बीड

मानवता संस्कार शिविर - शेम्बालपिंपरी (ता.पुसद)

प्रान्तीय सभाद्वारा शेम्बालपिंपरी में आयोजित शिविर में प्रधान व्यायाम प्रशिक्षक आचार्य श्री हरिसिंहजी आर्य का सम्मान करते हुए आर्ययुवक श्री हेमंत देशमुख ।

व्यायाम शिक्षक श्री राजेशजी आर्य का स्वागत करते हुए स्थानीय आर्ययुवक

समापन समारोह में प्रस्तावना रखते हुए शिविर के संयोजक श्री प्रदीपजी देशमुख । मंचपर हैं श्री प्रभाकरराव देशमुख एवं अन्य ।

REG.No. MAHBIL/2007/7493 ★ Postal No. L/Beed/18/2015

सेवा में,
श्री ____________________

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महा इस स्थान से प्रकाशित किया।

जीवेत् शरदः शतम् ।

परोपकार, समाजसेवा, वेदप्रचार, शिक्षाप्रसार तथा नागपुर शहर व विदर्भ, म.प्र आर्य समाज की गतिविधियों को बढाने में कार्यतत्पर आदर्श आर्य दम्

श्री.पं.सुरेन्द्रपालजी आर्य
(प्रसिध्द भजनोपदेशक व गीतकार, नागपुर)

सौ.करुणादेवी आर्या
(अवकाशप्राप्त मुख्याध्यापिका, मन्त्राणी, महिला आर्य समाज, जरीपटका, नागपुर)

के गौरव में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह